गीत गुंजन

श्यामपालसिंह चौहान ‘श्याम’

गीत गुंजन

(काव्य संग्रह)

श्यामपालसिंह चौहान 'श्याम'

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन

9, माधव पार्क विभाग - 2, माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - 382418

GEET GUNJAN
by : Shyampalsingh Chauhan 'Shyam'

© श्यामपालसिंह चौहान 'श्याम'

प्रथम संस्करण : **2022**

मूल्य : ₹ 250/-

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन
9, माधव पार्क विभाग – **2,**
माधव इन्टरनेशनल स्कूल के पास,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद – **382418**
(M) 94276 22862

कम्प्यूटर टाईप-सेटिंग एन्ड ले-आउट : **महेन्द्र पंड्या**
फागुन ग्राफिक्स
48, पूर्वीनगर, घोडासर केनाल, भाडुआत नगर के पास,
घोडासर, अहमदाबाद – **380 050**
(M) 98255 04661
Email : fagungraphics@gmail.com

Priters :
पार्थ ग्राफिक्स एन्ड प्रिन्टर्स
4-FF, श्रद्धा कोम्प्लेक्ष, गोविंदवाडी,
इसनपुर, अहमदाबाद
(M) 9033225924

ममता मई माँ

स्व. श्रीमती शंकरी देवी

एवं

परम स्नेही पिता

स्व. भूमिराज सिंह चौहान

की स्मृति में

सादर समर्पित

प्राक्कथन :-

देश के विभिन्न भू-भागों से आकर बसनेवाले तथा पश्चिमांचल (गुजरात) को अपनी कर्म-भूमि बनानेवाले एवं अपने साहित्य सृजन से उसे समृद्ध बनानेवाले बहुसंख्यक रचनाकारों में भाई श्री श्यामपाल सिंह चौहान का नाम भी उल्लेखनीय है । फरुखाबाद (उ.प्र.) के गाँव बिल्हा में जन्मे चौहानजी अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद सन् १९६० में अहमदाबाद आकर बस गए। बंधुवर चौहानजी पेशे से शिक्षक रहे । घर-गृहस्थी के दायित्व निष्ठा से निभाते हुए वे संवेदनात्मक स्तर पर काव्य-कला की ओर भी उन्मुख हुए । स्थानीय कवि-मित्रों के साहचर्य से आप भी कवि-कर्म से जुड़ गए । फलतः उनकी काव्य-प्रतिभा निरंतर पल्लवित होती गई ।

एक कलमकार के रुप में, मैं उन्हें दो दशकों से जानता हूँ । वे यों तो छांदस-अछांदस सभी प्रकार की काव्य-रचनाएँ करते हैं, किन्तु उनकी प्रमुख काव्य-विधाएँ गीत-ग़ज़ल ही है । अभी-अभी कुछ समय पूर्व ही उनका एक कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुका है ।

'गीत-गुंजन' शीर्षक से अब यह उनकी दूसरी काव्य-कृति प्रकाशनाधीन किंवा यंत्रस्थ है । मुझे ग्रंथस्थ उनके सभी गीतों की अन्तः यात्रा करने का सुयोग मिला है ।

गीति-काव्य की मूल संवेदना का निर्वहन करते हुए भी चौहानजी देश-दुनिया की समकालीन परिस्थितियों के प्रति निरंतर सजग रहे हैं । उन्होंने अपने परिवेश को पूरी प्रामाणिकता के साथ उकेरा है । परिवार, समाज, राजनीति के क्षेत्र की विसंगतियों को न केवल खुली आँखों से देखा है, वरन् उन्हें संवेदनात्मक स्तर पर महसूस भी किया है ।

चौहानजी के ग्रथंस्थ गीतों को मोटे तौर पर कुछ यूँ वर्गीकृत किया जा सकता है :-

१. **प्रकृति-चित्रण व ऋतु-वर्णन :** यथा, आई बरखारानी, चाँदनी रात, मधुमास की मधुरिमा, रुठ गए बादल, बहारों से, नव पल्लव, कजरारे बादल, अब बसंत में, ऋतु बासंती आई, रात का नज़ारा आदि ।

२. **तीज-त्यौहार विषयक गीत :** दीपों का त्यौहार, प्रकाश का पर्व, कान्हा की होली, होली का त्यौहार आदि ।

३. **राष्ट्रीयता, देश-भक्ति, मानवता विषयक गीत :** भारत हमारी धड़कन, मालिक एक हमारा है, प्रेम की सगाई, वन्दे मातरम्, मत उगलो विष अभियान गीत, दिलों के रिश्ते आदि ।

४. **देश-दुनिया के मौजूदा हालात :** घात-प्रतिघात, भारत की राजनीति, आबोहवा रोगिष्ठ है, आतंकी दैत्य आदि ।

५. **वैयक्तिक चेतना/व्यक्तिनिष्ठ गीत :** याद सताती है, जब याद आए है, उन्मन-उन्मन चित्त हमारा, धोखा दिया है, प्रेम-पिपासा ज़िंदगी के सहारे, काहे बसे परदेश आदि ।

६. **चिंतन-मनन व जीवन-दर्शन विषयक गीत :** अविराम शयन, उन्मन उन्मन चित्त हमारा, हम कहाँ आ गए आदि ।

कुल मिलाकर यह कहना ही समीचीन होगा कि श्यामपालजी का गीतकार एकदम स्वतंत्र है । वह किसी एक खूँटे से बँधकर नहीं रहा है । अयुक्ति संगत न होगा यदि कहा जाए कि विवेच्य कवि प्रकृत्या स्वैरविहारी है । अंतस्तल की गहराई से जब जो भावोर्मि उठी उसी के अनुरूप उसने अपने आपको मोड़ लिया है । अतः उसे किसी एक क्षेत्र-विशेष किंवा विषय विशेष का कवि/गीतकार नहीं कहा जा सकता । गरज़ कि जहाँ मन रम गया वहीं कवि जम गया । हाँ, कवि का चिंतन अवश्य उसका साथ सर्वत्र निभाता रहा है । उक्त वर्गीकरण के मद्देनज़र कुछेक उद्धरणों के प्रकाश में इस तथ्य/विधान की पड़ताल करना अप्रासंगिक न होगा ।

सर्वप्रथम कवि के एक कवित्त में 'बसंत की बहार' देखिए -

"रंग उड़े गलियन में बगियन में फूल खिले,
आज द्वार दस्तक बसंत ने लगाई है ।
गए पीत पात सब, कोंणलें सुहाई नव,
आम्रकुंज मंजरी सुगंध भर लाई है ।
गेंदा, गुलाब, गुड़हल, गुलामास, गुलबार,
केसर, कनैर, कचनार की लुनाई है ।
पवन पराग पाय भयो मतवारो सखि,
फागुन ने फूलन की जाजम बिछाई है ।"

वर्षा-वियोगिनी का यह चित्र भी मर्मस्पर्शी है -

''बरसे जलद, धरा गर्भानी,
पहन हरित पट चुनरी सयानी,
भये सजल लखि मोरे नयनवा,
बरखा बैरन भई दिवानी ।
लागि अगिनि जिया नाहीं जरत है,
पिय बिछोह विधि काहे जियाए रे ।''

कवि ने तीज-त्योहारों के वर्णन में दीवाली और होली को विशेष महत्त्व देते हुए एकाधिक गीत रचे है । 'दीपों का त्यौहार' का एक संदेश प्रद चित्र दृष्टव्य है **:-**

''घोर तिमिर में दीप जलाएँ,
आलोकित घर द्वार बनाएँ
रहे अछूता रंध्र न कोई,
ऐसी दीपोत्सवी मनाएँ ।
जग-मग, जग-मग ग्राम नगर हों, खुलें प्रगति के द्वार ।''

देशभक्ति / राष्ट्रीय चेतना विषयक कई गीत, संग्रह में विद्यमान हैं । देशभक्ति से भरपूर यह गीतांश अत्यंत उत्साहवर्धक है ।

''बहादुर बनो, देश के नौ जवानो
कायर को मुर्दे से बदतर ही जानो
जवाँमर्दी का माने लोहा तमाम ।
वतन की शमा पर जो जलते रहे हैं,
कफ़न बाँध सर पे निकलते रहे हैं
हे नग़मा मेरा उन शहीदों के नाम ।''

'भारत हमारी धड़कन' से आज की स्वार्थांध राजनीति एवं समाज में व्याप्त विघातक विसंगतियों और विद्रूपताओं को भी कवि ने न केवल उजागर किया है, अपितु उन पर निर्ममतापूर्वक शाब्दिक व्यंग्य-बाण चलाकर एक प्रकार से अपना युग-धर्म भी बखूबी निभाया है ।

'भारत की राजनीति' शीर्षक गीत में देश की भ्रष्ट सियासत और अभावग्रस्त तड़पती मुल्क की जनता का यह चित्रण कितना हृदय विदारक है । गीत की कतिपय पंक्तियाँ देखिए –

''दिन-रात पसीना बहा खड़े करें तो महल
दमकें वो रोशनी में और हो चहल-पहल
सिर पर ग़रीब के न क्यों छत के भी साये हैं ।
जो भ्रष्ट लोग लूट-घोटाले करें यहाँ
पकड़े न कोई कान यूं बेख़ौफ़ सब यहाँ
संसद को तो ननिहाल ये अपनी बनाये हैं ।

आजकल आतंकवाद देश-विदेश की एक प्रज्वलित समस्या है । दुनिया के प्राय: सभी देश/भू-भाग आतंकवाद के आसुरी पंजों से भयाक्रांत हैं । 'आतंकी दैत्य' शीर्षक गीत की कुछ पुरअसर पंक्तियाँ देखिए –

मुझे सताए तुम्हें सताए उसे सताए ।
ये आतंकी दैत्य हमें बेचैन बनाए ।
जागो जागो हे बुद्धिजीवियो -
कसो कमर है युवक-युवतियों -
आगे आओ देश-प्रेमियो -
हे चाणक्य ! चंद्रगुप्तो ! पद-दलित न माँ हो पाए ।

उद्‌धृत गीतांशों से पाठक देख और अनुभव कर सकेंगे कि हमारा गीतकार बहुक्षेत्रीय जन-जीवन को अपने गीतों का उपजीव्य बनाता है । किसी एक क्षेत्र/विषय तक ही उसकी दृष्टि सीमित नहीं है ।

श्यामपालजी विषयानुरुप भाषा का प्रयोग करते हैं । ऋतुओ एवं तीज-त्योहारों के वर्णन में उन्होंने देशज और ग्राम्य शब्दों का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं किया है । लगता है ब्रजभाषा के लालित्य से कवि अभिभूत है। वह ब्रजभाषा से सुपरिचित भी है अत: ब्रजभाषा के शब्दों का भी बेझिझक प्रयोग किया है । चूँकि श्यामपालजी ग़ज़लें भी लिखते हैं, उनके गीतों में विषयानुरुप कहीं-कहीं उर्दू शब्दों का भी प्रयोग मिलता है । गरज़ की श्यामपालजी भाषा के मामले में तंगनज़र न होकर पर्याप्त उदार है ।

जहाँ तक अलंकर - योजना का प्रश्न है, कवि ने अलंकारों को सायास नहीं जुटाया है । उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा जैसे बहुत प्रचलित अर्थालंकारों और कवित्त जैसे छंदों में क्वचित् शब्दालंकारों का प्रयोग भी अनायास हुआ है । रुमानी अनुभूतियों के वर्णन में कोमलकांत पदावली का तो 'अविराम शयन' जैसे जीवन-दर्शन विषयक गीतों में तद्नुसार आध्यात्मिक शब्दावली का प्रयोग भी हुआ है जो स्वाभाविक ही है । हाँ, गीतों में भाषा की दृष्टि से कहीं क्लिष्टता या दुर्बोधता न आने पाए इसके प्रति भी कवि सावधान लक्षित होता है । गीत-रचना के लिए गीतों में गेयता जैसी आवश्यक शर्त का निर्वहन करने के प्रति भी गीतकार पर्याप्त सतर्क है । विषयानुरुप कवि कहीं आत्मनिष्ट भी रहा है और कहीं वस्तुनिष्ठ भी ।

मेरा विश्वास है, सुधी साहित्यकार श्यामपालजी की गीतिकाव्य कला का उत्साहवर्धक उष्मा के साथ स्वागत करेंगे और उनके गीतकार का भावी मार्ग प्रशस्त करेंगे । शुभमस्तु !

- प्रो. भगवानदास जैन

संपर्क :- B-105, मंगलतीर्थ पार्क, कैनाल के पास,
जशोदानगर रोड, मणिनगर (पूर्व)
अहमदाबाद - 382445 (गुजरात)
(M) 8238306383

आत्मकथ्य

गीत जीवनानंद एवं मन की अनुभूत पीड़ाओं को शब्दों का जामा पहनाकर व्यक्त करने का अनूठा तरीका है । वे लय एवं भावमाधुर्य से पाठकों और श्रोताओं को अनुपम आनंद प्रदान करते हैं तो कभी पीड़ा को कुरेदते हैं। वे उन्हें स्वयं में ओतप्रोत कर देते हैं । साहित्य में गीत की ललित साहित्य में गणना होती है । कोमलकान्त पदावली मन को मोह लेती है । गीत में इसका भरपूर उपयोग होता है । गेयता गीत को अमर बना देती है । वे उदास मन में प्रेम की उर्मियाँ जगाने की क्षमता रखते है ।

मैं माध्यत्मिक विद्यालय के काल से गेय कविताओं के साथ भावसभर तादात्म्य स्थापित कर उन्हें याद कर लेता था । अंताक्षरी एवं पाठशाला के समारोहों में उन्हें व्यक्त करने का अवसर ढूँढ़ता रहता । रेडियो पर गीत सुनना मेरी खास पसंद थी, जो कि आज भी है । इसी पसंद और शौक ने मुझे गीत रचना की ओर प्रेरित किया । प्रारम्भ में फिल्मी गीतों की धुन पर भजन और कीर्तनों की पेरोड़ी रुप में रचनाएँ हुई ।

शिक्षक के रूप में नियुक्ति होने के पश्चात् विद्यालय में मेरा काव्य रसिक मित्रों जैसे अवधेश बहादुरसिंह, मुनीर अहमद अंसारी, खेमराज जैन आदि से परिचय हुआ । हम परस्पर एकदूसरे की रचना सुनते, सराहते और सुझाव भी देते । इस प्रकार हमारे काव्य लेखन को प्रोत्साहन मिलता । इसी दरम्यान स्व. सेवाराम गुप्त से मेरा परिचय हुआ । वह गुजराती माध्यम की माध्यमिक शाला में अध्यापन कर रहे थे । 'साहित्यालोक संस्था' से उनके द्वारा मेरा परिचय हुआ । यह संस्था अहमदाबाद की साहित्यिक गीत विधियों वाली प्रतिष्ठित संस्था है । सन १९६० के दशक से यह कार्यरत है । नियमित मासिक गोष्ठियों का आयोजन एवं संस्था से जुड़े कवि मित्रों की रचनाओं के कई संकलन प्रकाशित कर चुकी है । इस संस्था से मुझे बहुत सहकार और प्रोत्साहन मिला है । मेरी काव्ययात्रा को मार्ग प्रदान करने के लिए साहित्यालोक संस्था एवं उससे जुड़े कवि मित्रों का बहुत-बहुत आभारी हूँ । मित्र स्व. सेवाराम गुप्त का (प्यासे को कुएँ तक पहुँचाने) भी मैं आभारी हूँ ।

साहित्यालोक की गोष्ठियों के साथ-साथ अहमदाबाद के प्रसिद्ध मा.जे. पुस्तकालय में होनेवाली साहित्य चोरा की साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठी में भी

मैं सक्रिय रहा हूँ। वहाँ से प्रकाशित काव्य मंजूषा भाग १-२ संकलन में मुझे स्थान मिला है। साहित्यालोक के प्रकाशित संकलन, जलते दीपक, उजाले की ओर, संवेदना के स्वर में मेरी रचनाएँ शामिल है। वर्तमान में गुलदस्ता काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है। साहित्य एकेदमी गाँधीनगर से स्वीकृत ग़ज़ल संग्रह प्रकाशनाधीन है। 'गीतगुंजन' गीत संग्रह सुधी पाठकों एवं मित्रों के कर कमलों तक पहुँचाने का साहस कर रहा हूँ। इसकी सफलता - असफलता का निर्णय आप लोगों पर निर्भर है।

मेरी काव्य रचनाओं को निखार एवं मुझे हमेशा सुझाव और प्रोत्साहन देते रहनेवाले पश्चिमांचल के सिद्धहस्त एवं प्रख्यात ग़ज़लकार प्रो. श्री भगवादानदास जैन साहब का मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ। आपके कई एक ग़ज़ल संग्रह पाठकों द्वारा खूब सराहे गये हैं। आपसे मुझे अग्रज जैसा स्नेह और गुरु जैसा मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहता है। आपने मेरे इस गीत संग्रह के एक-एक गीत को पढ़ा है। इसका 'प्राक्कथन' आपके कर कमलों से लिखित है।

मेरे द्वारा लिखित साहित्य को प्रकाशित कराने के लिए मुझे सादरबाध्य करनेवाले मेरे सुपुत्र श्री दिनेशसिंह का मैं प्रोत्साहन के लिए आभारी हूँ। मेरे रचित काव्यों को प्रकाशित कराने के लिए वह हमेशा आग्रह करता रहा है।

श्री विजयकुमार तिवारी अध्यापक एवं प्रसिद्ध ग़ज़लकार जो कि 'साहित्य सेतु परिषद' एवं 'विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान' के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष भी है - का मैं शुक्रगुजार हूँ। मेरे 'गुलदस्ता' काव्यसंग्रह का प्रकाशन आपके द्वारा ही हुआ। इस 'गीतगुंजन' गीत संग्रह का प्रकाशन भी आप ही कर रहे हैं। आपके द्वारा मेरे जैसे अनेक रचनाकारों को प्रोत्साहन मिल रहा है।

अंत में, मैं इस गीत संग्रह (गीतगुंजन) को अपने स्मृतिशेष माता-पिता स्व. श्रीमती शंकरीदेवी एवं स्व. भूमिराजसिंह चौहान को उनकी स्मृति में समर्पित करता हूँ जिन्होंने बड़े प्यार से मेरा बचपन सजाया - संवारा था। मैं उन दोनों पितरों का बहुत-बहुत आभारी हूँ। पुण्यात्मा उन दोनों को मेरा शत-शत नमन।

A/551, अर्बुदानगर, ओढव, - **श्यामपालसिंह 'श्याम'**
अहमदाबाद - 382415
(M) 9408978793

अनुक्रमणिका

१. हो भला क्यों कर सबेरा	१५
२. दीपो का त्यौहार	१७
३. जीवन और पतंग	१८
४. बसंत की बहार	२०
५. जब याद आये है	२२
६. हम कहाँ आ गये	२३
७. आई बरखा रानी	२४
८. आतंकी दैत्य	२५
९. भारत की राजनीति	२६
१०. चाँदनी रात	२७
११. आपने हमको दिये गम	२८
१२. धन नभ जाये रे	३०
१३. कथनी - करनी	३१
१४. याद सताती है	३३
१५. सत्य के सपन	३५
१६. प्रीतम को पाती	३६
१७. उन्मन-उन्मन चित्त हमारा	३७
१८. उठो श्याम	३८
१९. अविराम-शयन	४०
२०. मधुमास की मधुरिमा	४२
२१. नदिया की धार में	४४
२२. काहे बसे परदेश	४५
२३. रुढ गये बादल	४६
२४. होली आई रे	४७
२५. प्रकाश का पर्व	४८
२६. भ्रमर मचाये शोर	५०
२७. धोखा दिया है	५२

२८. घात-प्रतिघात ५३
२९. खयालों से कह दो ५५
३०. बहन का खत ५७
३१. मन की उमंगे ५९
३२. थोडा-थोडा ६०
३३. अनोखी बेला ६१
३४. भारत हमारी धड़कन ६३
३५. बहारों से ६४
३६. तेरे ही नाम ६५
३७. हम तरसते रहे ६६
३८. कान्हा की होली ६७
३९. जिन्दगी के सहारे ६८
४०. जाने क्यों ६९
४१. क्या बताएँ ७१
४२. झूम लो साथियो ७२
४३. उल्फ़त के गीत ७३
४४. मालिक एक हमारा है ७४
४५. प्रेम की सगाई ७५
४६. आतिश ७७
४७. बीमार चमन ७९
४८. इन्हें मत भूलना यारो ८०
४९. जिन्दगी के फसाने ८१
५०. उनकी बातें ८२
५१. खत तेरे नाम ८३
५२. प्रेम पिपासा ८४
५३. वन्दे मातरम् ८६
५४. आब-हवा रोगिष्ट है ८७
५५. प्रथम प्रेम ही है ये मेरा ८८
५६. अपनी जीवन डोर ८९

५७. सपने बिखर रहे	९१
५८. नव पल्लव	९२
५९. कजरारे बादल	९३
६०. गीतों के दीप जले	९४
६१. बस अब और नहीं	९५
६२. रे मन अलगारी	९६
६३. चारों तरफ अँधेरा	९७
६४. मत उगलो विष	९९
६५. हम सफर बन चलूँगा	१००
६६. चलते-चलते शाम हो गई	१०१
६७. अभियान गीत, देश भक्ति हम	१०२
६८. प्यार हो मेरे दिल में...	१०४
६९. रहे लडखड़ा है हम	१०५
७०. जिनकी पीड़ा को	१०६
७१. युग नदी किनारे	१०७
७२. ऋतु बासंती आई	१०९
७३. भाई-भाई है हम	१११
७४. तेरी चाह में	११३
७५. अगर हम न होते	११४
७६. दिल की किताब	११६
७७. साजनवा घर आ	११७
७८. ऐ दिल मुझे बताना	११८
७९. चाँद दूल्हा बना	११९
८०. होली का त्यौहार	१२०
८१. दिलों के रिश्ते	१२१
८२. गीत है उद्गार मेरा	१२२
८३. दिल के तार	१२४
८४. रात का नज़ारा	१२५
८५. अब बसंत में	१२६

१. हो भला क्यों कर सबेरा

तन श्रमित है,
मन भ्रमित है;
कंठ है अवरुद्ध मेरा;
घोर घन नैराश्य के हैं -
कर रहे चहुँ ओर घेरा ।
हो भला, क्यों कर सबेरा ?

जीत की आशा नहीं है,
हार का पांसा नहीं है,
रो रही आँखें है पल-पल
भाव हैं भाषा नहीं है;
राह में तूफान तन ने
कर लिया है सांध्य डेरा ।
हो भला, क्यों कर सबेरा ?

गीत-गुञ्जन खो रहा है,
सुर विरति में रो रहा है;
अब न होते तार झंकृत
भार वीणा ढो रहा है;
खो गई आनंद लहरी
दर्द बढ़ आया घनेरा ।
हो भला, क्यों कर सबेरा ?

आ गया अभिसारिका बन,
खिल गया नभ-तारिका बन;
ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या
खेलते शुक-सारिका बन;
पंथ-मत अति भिन्न सारे
कर रहे दिन में अँधेरा ।
हो भला, क्यों कर सबेरा ?

२. दीपों का त्योहार

आया है फिर ज्योति जगाने,
दीपों का त्योहार;
आओ निल निर्माण करें हम
खुशियों का संसार ।
घोर तिमिर में दीप जलायें,
आलोकित घर द्वार बनायें;
रहे अछूता रंध्र न कोई
ऐसी दीपोत्सवी मनाएँ;
जगमग-जगमग ग्राम-नगर हों
खुलें प्रगति के द्वार ।
मन से ईर्ष्या द्वेष भगायें
प्रेम-प्रीति की रीति निभायें
अंधकार के महिषासुर की
दीप-शिखा से चिता जलायें;
हम अतीत को भूल गिराएँ
नफ़रत की दीवार ।
वीर प्रसूता भूमि हमारी
फिर हममें कैसी लाचारी;
द्वेष-दुश्मनी देश रखें जो
उनको दें हम हार करारी;
हर दीवाली जश्न मनाएँ
कर दुश्मन संहार ।

३. जीवन और पतंग

राह भूले पछताये है ।
चित्त को चैन न आये है ।

फिरकी लाये, डोर रंगाई,
किन्या बाँध पतंग चढ़ाई;
उड़ी आकाश पेंच लड़ बैठी
कीन्हीं जोरा-जोरी;
ये खींचा और वो काटा में
कटी स्वयं की डोरी;

हाथ मलता रह जाये है ।
चित्त को चैन न आये है ।

खेल-कूद में बचपन खोया,
चढ़ी जवानी बेसुध सोया;
मग्न हुआ मन रंगरलियों में
ब्याहि बनाई जोरी;
करे गलतियाँ कदम-कदम पर
बोले फिर-फिर सोरी;

नियति यों बनती जाये है ।
चित्त को चैन न आये है ।

दुनियादारी में भरमाया,
प्रौढ़ भये अतिशय पछताया;

थोड़ा वक्त काम सब बाकी
हाय भई मति भोरी;
सूझ न आये कोई युक्ति
देऊँ किसे अब खोरी;

बहुत मन में घबराये है ।
चित्त को चैन न आये है ।

जन्म लिया था शुभ कर्मों को,
भूल गया उन आदर्शों को;
बहुत करी है ताता थैया
चुपके चोरी-चोरी;
बीत गई जीवन की घड़ियाँ;
जलने आई होरी;

पड़ा फिर-फिर पछताये है;
चित्त को चैन न आये है ।

मानव जन्म पतंग समाना
कुछ दिन रहे अकाश-उड़ाना;
ब्याह भये अरमां नव जागें
नाचे छम-छम गोरी;
संघर्षों से पड़े जूझना
टूटे जीवन डोरी;
मृत्यु आकर ले जाये है ।
चित्त को चैन न आये है ।

४. बसंत की बहार

रंग उड़े गलियन में, बगियन में फूल खिले,
आज द्वार दस्तक बसंत ने लगाई है ।
गये पीत पात सब, कोपलें सुहाई नव,
आम्रकुंज मंजरी सुगंध भर लाई है ।
गेंदा, गुलाब, गुड़हल, गुलामास, गुलनार,
केसर, कनैर, कचनार की लुनाई है ।
पवन पराग पाय, भयो मतवारो सखि,
फागुन ने फूलन की जाजम बिछाई है ।

कोयल की कूक मधु कानन में घोरि रही,
कली-कली अलिअन के गीत सुन लजाई हैं।
शापित अनंग है सजीब भयो कण-कण में,
जानि परै याकी फिर रति सों सगाई है ।
साज सब साजि रहे, ढोल-ढप बाजि रहे,
ऋतु-राज फागुन की भेजी बधाई है ।
सखि रूठे साजन जो, मुँह फेरि बैठे थे,
होली आज उनको मनाइबे को आई है ।

राधिका को नाम लैके, रास को सुनाम दैके,
नटराज श्याम वंशी ब्रज में बजाई है ।
मन में उमंग भरे, गोपी ग्वाल रंग भरे,
लै पिचकारी धाये कहें होली आई है ।
भरि पिचकारी मारी, सररर-सररर,
श्यामजी ने राधिका की चूनरी भिंजाई है ।

लैके गुलाल हाथ, राधिकाजी धरि धाईं,
श्याम मुख पोति दियो बानर बनाई है ।

धूम मची चहुँ ओर, बालवृंद करें शोर,
गली-गली रंग की तरंग में नहाई है ।
रास के बसंती गीत, गाय रहे नारि-नर,
प्रेम की उमंग जैसे देह धरि आई है ।
रंग-रस छाय रह्यो, ब्रज उमड़ाय रह्यो,
चहुँ ओर होली आई, धुति नभ छाई है ।
ग्वाल-बाल गोपियाँ हैं, रंग बदरंग भये;
देखिये बसंत की बहार कैसी आई है ।

५. जब याद आये है

नयनों की कोर नम
पलकें बिछाये है,
सजनी को साजन की
जब याद आये है ।
रातों को रूठने की,
प्रेमरस लूटने की,
ख्वाबों के टूटने की
पीर उभर आये है ।
मन की मयूरी चुप
साँस जाये रुकरुक;
आस-पास पी की जब
न, थिरकन दिखाये है ।
चंदा की चाँदनी भी,
सरगम की रागिनी भी;
ऋतु मन भावनी भी
आग बरसाये है ।
प्रीति अनुभूति ऐसी,
जीवन संगीत जैसी;
लहरों के गीत जैसी
सपने सजाये है ।

६. हम कहाँ आ गये

हम कहाँ आ गये, हम कहाँ आ गये ?
रास्ता छोड़कर, हम कहाँ आ गये ?
शाम होने लगी, छा अँधेरा गया
वक्त से होड़कर, हम कहाँ आ गये ?
देश आज़ाद हो, और आबाद हो
ये ही मक्सद, हमारे शहीदों का था;
भूलकर उनकी कुर्बानियों की कथा
यूँ कदम मोड़कर हम कहाँ आ गये ?
कुछ तो चलते यहाँ, बैठकर कार में,
पर अनेकों है ऐसे, जो बेकार हैं;
है मलाई मिली, चंद लोगों को ही
कारवां छोड़कर हम कहाँ आ गये ?
रास्ते सबके अपने, अलग हो गये,
कुछ हैं बीमार, कुछ नींद में सो गये;
चाल कछुए की चलते, तो भी ठीक था
व्यर्थ की होड़कर हम कहाँ आ गये ?
है सियासत ने जनता को धोखा दिया,
रहनुमाओं ने अपना है, घर भर लिया;
बनके धननंद हैं, लूटते जा रहे;
इनसे गठजोड़ कर, हम कहाँ आ गये ?
आम जन ले मशालें निकलिये सभी,
हक मिलेगा नहीं, माँगने से कभी;
छीन लो अपना हिस्सा जरूरत समझ
अपना तन तोड़कर, हम कहाँ आ गये ?

७. आई बरखा रानी

आई बरखा रानी बच्चो !
बादल घिर-घिर आये,
दिन को सूरज, रात को चंदा
लुक-छिप खेल रचाये !
कभी बड़ी बूदों से बरसे
कभी फुहार सुहानी,
प्यास बुझाने धरती मां की
आई बरखा रानी,
अमबा की डाली पर कोयल
गीत सुरीले गाये ।
गला फुलाकर पीले-पीले
मेंढक शोर मचाते;
काले-काले देख घोर-घन
मोर थिरकते जाते;
बादल गरजें, बिजली चमके
धरती खूब नहाये ।
आओ इस फुहार पहली का
हम भी लाभ उठायें,
उछल कूदकर गलियारे में
लोटें और नहायें
कागज़ की यह मेरी नैया
सरसर करती जाये ।

८. आतंकी दैत्य

मुझे सताये, तुम्हें सताये, उसे सताये,
ये आतंकी दैत्य, हमें बेचैन बनाये ।
राह चलंतों में भी डर है,
बाग-बगीचे में थर-थर है,
रेल-बसों में घुसर-पुसर है
दहशत का ये भूत, सभी का मन दहलाये ।
बच्चे डर से, काँप रहे हैं,
बूढ़े घबरा, हाँफ रहे हैं,
गबरू बगलें, झाँक रहे हैं,
कौन बने सेनापति, आगे कदम बढ़ाये ।
भटक गये हैं, धर्मजुनूनी,
तर्क न उनके हैं, कानूनी,
लड़ा रहीं ताक़त बेरूनी
जनता मरे, सुरक्षित नेता, आँच न आये ।
संसद में भारी खटपट है,
नारेबाजी लपट-झपट है,
मन में इनके घोर कपट है,
प्रगति देश की जाये भाड़ में, ये हो रहे सवाये ।
जाग जाइये बुद्धि जीविओ,
कसो कमर हे युवक युवतियो !
आगे आओ, देश प्रेमियो,
हे चाणक्य ! चंद्रगुप्तो, पद-दलित न माँ हो पाये ।

९. भारत की राजनीति

भारत की राजनीति ने क्या गुल खिलाये हैं ।
दुखिया गरीब और भी दुखिया बनाये हैं ।
देखो हुए हैं लोग कैसे आज बदचलन,
लूटे है पासवां ही घर को बन के राह जन;
घर के चिराग ने ही घर, अपने जलाये हैं।
जलती रहे जो शम-अँ बन, रोशन जहांकरे,
बतलाइये वो किससे शिकायत यहाँ करे;
इल्ज़ाम उसपे कत्ल के, हमने लगाये हैं ।
लुटती सरे-बजार है, अस्मत भी अब यहाँ,
औरत की फूट है गई किस्मत ही, अब यहाँ;
कहने को राज ने बहुत, पहरे बिठाये हैं ।
दिन-रात पसीना बहा, खड़े करें महल,
दमकें वो रोशनी से, और हो चहल-पहल;
सिर पर गरीब के न क्यों, छत के ये साये हैं ।
बारिश व शीत-घाम से, जिनको न कुछ गिला,
या रब ! नसीब से बता उन्हें है क्या मिला ?
फिर आप दीनबंधु प्रभु, क्यों कर कहाये हैं ?
जो भ्रष्ट लोग, लूट-घोटले, करें यहाँ,
पकड़े न कोई कान वो, बेखौफ़ सब यहाँ;
संसद को तो, ननिहाल ये, अपनी बनाये हैं ।

१०. चाँदनी रात

शरद-चंद में घुली हुई है,
आज चाँदनी रात;
जी करता है कहदूँ तुमसे
अपने मन की बात ।
रहता है उन्मन-सा ये मन,
घबराता दिन रात;
तुम दो पलको आ जाती तो
क्यों होता व्याघात ।
हल्का हो जाता उर मेरा,
कट जाती यह रात;
इन्द्र-धनुष-सी उम्मीदों में
भर जाते रंग सात ।
भूल गये क्या प्रथम मिलन की,
अपनी पहली रात;
चुरा लिया था, तुमने मुझको
करते-करते बात ।
डोल रहा विरही मन मेरा,
जैसे पीपल पात;
प्रेम-बंध की बेड़ी पहना
हर लो सब उत्पात ।
जाग रहीं आशा की किरनें,
दूर है अभी प्रभात;
आ जाओ प्रिय मधुर मिलन में
देने मुझको मात ।

११. आपने हमको दिये ग़म

आपने हमको दिये ग़म, सैकड़ों सनम;
शुक्रियादा आप का हम पर किया करम ।
हम बिछुड़कर आपसे
थे लड़खड़ा गये;
कुछ दिनों तक ख्वाब
नींदों को उड़ा गये ।
अब संभलते जा रहे हैं, फिर मेरे क़दम ।
शुक्रियादा आपका, हम पर किया करम ।
छोड़कर मझधार तुमने
तो किनारा कर लिया;
किन्तु लहरों ने मुझे भी
ला है साहिल पर दिया ।
साथ-चलने के गये अब, टूट सब भरम ।
शुक्रियादा आपका, हम पर किया करम ।
स्वप्न देखे थे बनायेंगे
हम अपना आशियाँ,
होगी, वो जन्नत हमारी
और उल्फ़त का निशां;
हैं बिखर तिनके गये, हम राह हम न तुम ।
शुक्रियादा आपका, हम पर किया करम ।

हों तुम्हें खुशियाँ मुबारक,
लो दुआ मेरी;
साथ में कटनी थी मंजिल
कट गई उतनी;
ज़िन्दगी का तुम समझ पाये न हम मरम ।
शुक्रियादा आपका, हम पर किया करम ।

१२. घन नभ छाये रे

गरजत-बरसत घन नभ छाये रे ।
पी-पी पपीहरा रटन लगाये रे ।
मोर टहुक सुनि, ठीस उठति है
सखि, सांजन अबहूँ नहिं आये रे !
मेघ तड़प दामिनि यों दमके,
चंचल किरन चाँदनी चमके;
लता विटप से धरि लिपटाहीं
निठुर बलम आये नहिं अबके
दिवस जात यादन में उनकी,
रतियाँ अँखियन, नींद न आये रे ।
बरसे जलद, धरा गर्भानी
पहन हरित पट चुनरि सयानी,
भये सजल लखि मोर नयनवा
बरखा बैरन भई, दिवानी,
लागि अगिनि जिया, नाहीं जरत है;
पिय बिछोह विधि, काहे जियाये रे ।

१३. कथनी - करनी

लड़ें इलेक्शन घर भरने को
मिलकर लूट मचाई है;
कथनी-करनी में नेता की
लम्बी-चौड़ी खाई है ।

कथनी केवल आश्वासन को
जन-सेवक अपनाते हैं,
जिसके बल पर, सांसद और
विधायक ये बन जाते हैं,
वादे करते, काम न करते
जनता मूर्ख बनाई है ।

महँगाई की इन्हें न चिन्ता
भत्तों की सौगत मिले;
टेलीफोन, पेट्रोल, बिजली
की सेवा दिन-रात मिले;
बँगला-गाड़ी, नौकर-चाकर
की सुविधा भी पाई है ।

झूठ बोलकर सत्य छिपाना
जन्मसिद्ध अधिकार इन्हें;
रक्षक से भक्षक बन जाना
पूरा है इख्तियार इन्हें;
बेवस जनता राम-भरोसे
वह ही करे सहाई है ।

जनता की मजबूरी देखो
कैसे कोई विकल्प चुने;
काग यहाँ सारे काले हैं
कौन हंस की बात सुने;
दल तो सारे ही दलदल हैं
नीयत बीच खटाई है।

१४. याद सताती है

जब से हुए बलम परदेशी, भूल गये घर द्वार,
सूना हुआ अँगनवा मेरा, सूनी है चौपार;
पिया बिन नींद न आये है
करूँ क्या, याद सताये है ?
फल-फूल तितली मँडराये, कली-कली पर भौंरे
देखत विरह, अगिन बढ़ जाये, मितबा आओ दौड़े।
अब ना जियरा धीर धरत है
बलमा क्यों बिसराये ?
कोयलिया कूक सुनाये है ।
करूँ क्या, याद सताये है ?
आयो सावन घिरी अँधिरिया, बदरा गरजें भारी
चमकत बिजरी होऊँ बबरिया, सजना मैं तो हारी;
खोले अँखियाँ, जागूँ रतियाँ;
आँसुआ भर-भर आये,
पपीहरा पीहुका गाये है ।
करूँ क्या, याद सताये है ?
रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसे, पवन चले पुरवैया,
धड़के छतियाँ, तरसे जियरा, सूनी मेरी मढ़ैया;
दिनवा बीते इन्तजार में
रतियाँ चैन न आये,
चँदनियाँ आग लगाये है
करूँ क्या, याद सताये है ?

कौन बनाये टूटी खटिया, कौन छबाये छानी ?
बैरन बरखा भई हमारी, छत से टपके पानी ।
अँखियाँ बरसें, जैसे बदरा,
कजरा बह-बह जाये
उमरिया ढलती जाये है ।
करूँ क्या, याद सताये है ?
आवन कह गये, अजहूँ न आये, पावस बीती जाये,
सारी सखियाँ मिलकर गायें, गीत मल्हार सुहाये;
अमवा तले पड़े हैं झूले,
मुझको कौन झुलाये ?
श्याम-घन घिर-घिर आये हैं
करूँ क्या, याद सताये है ?

१५. सत्य के सपन

जा रहे हैं टूटते फिर, सत्य के सपन ।
आओ कि आज मिल करें, हम कोई तो जतन।

अब हृदय की क्यारियों में है कहाँ पानी,
भाव तरु की टहनियाँ हैं सूख कुम्हलानी;
स्नेह के घन आँख में फिर से बसाइये
प्रेम की बारिश हो, ऐसा कीजिए जतन

नफ़रतों के बीज ही बोता रहा इंसान तू,
मेल फिर किससे करेगा ये बतानादन तू
रास्ते पट जायेंगे जब बन-बबूलों से,
फिर तो बस पैदा करेगी, शूल ही धरन ।

कीजिए तरकीब ऐसी, आ मिले बहार,
फूल हर क्यारी में महकें, फिर से बेसुमार;
हर परिन्दा, घोसले में, रह सके सुख से
हम सजायें इस तरह से, आज ये चमन ।

रूठना ही टूटना है, मानकर चलिए
टूटकर बिखेरे नहीं, ये ध्यान धर चलिए;
अब न मुस्कानों पे, लोगों की लगें पहरे
हम सभी इन्सानियत का सीख लें-चलन ।

१६. प्रीतम को पाती

झुकी अँधिरिया सावन आयो, साजनवा घर आ ।
नचे बिजुरिया मन घबरायो, साजनवा घर आ ।
आई पावस की ऋतु प्यारी,
घिरी घटाएँ कारी-कारी;
मेहा बरसे, पड़े फुहरिया, साजनवा घर आ
पीहुका-पीहुका करे पपीहरा,
धड़कें छतियाँ, डोले जियरा;
अँसुआ ढरकें नैन गगरिया, साजनवा घर आ ।
पवन चले पुरवैया सजना,
तुम बिन सूनो मेरो अँगना;
अंग-अंग सिहरे, चले बयरिया, साजनवा घर आ ।
बदरा ले संदेशा जाना,
मोरे पिया को जाय सुनाना;
बाट निहारत भई बबरिया, साजनवा घर आ ।
करि सिंगार नित, तुम्हें पुकारूँ,
दर्पण में निज रूप निहारूँ;
'श्याम' लई क्यों फेर नज़रिया, साजनवा घर आ ।

१७. उन्मन-उन्मन चित्त हमारा

उन्मन-उन्मन चित्त हमारा
मधुवन-मधुवन तेरा प्यार;
साथ निभेगा कैसे अपना
मिलन भला हो कैसे यार ?
तुम कोयल की मधुर रागिनी
मेरा स्वर बिलकुल निस्सार ।
तुम्हें सुलाएँ, मधुप-तितलियाँ
मधुर लोरियाँ गीत सुनाकर,
पवन झुलाए, प्रेम पालने
थपकी पादप-पात लगाकर;
तुम रसवंती मधु-सुगंधयुत
थिरक रहीं पहने गलहार ।
मैं हूँ मरुथल के बबूल-सा
तपनि-ताप जिसको झुलसाये;
भूख-प्यास की क्या है गिनती
हो विक्षिप्त पर ना घबराये;
तुम अनंगजा कुसुम-कायिनी
हम हैं पाषाणी अवतार ।
पतझड़ के उजड़े तरु-सा मैं
निर्जन बन का हूँ बैरागी;
माया जनित न खग-मृग आयें
समझ मुझे बिलकुल हतभागी;
सदा तपसस्यालीन रहूँ मैं
मुझे न भायें, विषय-विकार ।

१८. उठो श्याम !

उठो श्याम, अविराम !
श्यन की
करिये तैयारी ।
हुआ जागरण बहुत
शिथिल तन,
खोई गति सारी ।

वनचर सोये
पंछी सोये,
प्राणी सकल
जगत के सोये;
शान्त सुप्त है प्रकृति
उनींदे नैना हैं भारी ।

मंद पवन
पग धरे सहम के,
जुगूनू-चमकें
हलके-हलके;
ताल बंद कर, तरु पातों ने
है झपकी मारी ।

मंथर गति
नदिया की धारा,
बहे तटों का
लिए सहारा;
बन कहांर ले चले कूल युग,
सरि को ससुरारी ।
शिथिल गात, तन
श्रमित हुआ है,
कब तक ढोया
रहे जुआ है;
नयन मूद, सो जा निदिया में
तज चिंता सारी ।

१९. अविराम-शयन

चलो श्याम !
अविराम-शयन की,
करिये तैयारी

लिप्त रहे
विषयों में जब तक,
बंधन मुक्त न
होगा तब तक;
प्रकृति-सुन्दरी
भोग शिथिल तन,
खोई गति सारी ।

रंगमंच है
जगती सारी,
निभा भूमिका
बारी-बारी;
होते पूर्ण खेल,
बिखरें सब;
पकड़ राह न्यारी ।

शक्ति रहे सुख
तन से भोगा,
क्यों पछताय

घिरे जब रोगा;
छूटे नारि
देर है इतनी,
अक्ल गई मारी ।
यह विश्राम
धरा पर तन का,
हो अंतिम
पड़ाव जीवन का;
पुनरागमन न होय
बही, कर दे
चुकता सारी ।

२०. मधुमास की मधुरिमा

मृदुल मंजुल, मधुमय मधुमास,
जगाये रसिक जनों में प्यास ।
नील-नीरज में बँध मदहोश,
मधुप मधुपान करे खामोश ।
तितलियाँ नर्तन में मशगूल,
मधुर-रस पियें फूल से फूल ।
बाग में महके फुलवारी,
रंग बिखरा क्यारी-क्यारी ।
पवन सौरभ से है भरपूर,
लताएँ लगतीं, जैसे हूर ।
आम्र-कुंजें हैं बौराई,
कोकिला गीत मधुर लाई ।
पपीहा पीहुका रटन करे
स्नेह निर्झर तेहि कंठ झरे ।
प्रकृति ने तजा जीर्ण परिधान,
नवल रंग-रूप नई पहचान ।
नवोर्मित-कोमल किसलय साज,
पल्लवित-कुसुमित है ऋतुराज ।
चारु चंदा से चकित चकोर,
कहे क्यों दूर बसे चित्त चोर ।
शीत किरणों का करता पान,
बनाए रखता अपनी आन ।
विरह की टेक, बड़ी न्यारी,
दूरियाँ लगतीं अति प्यारी ।

देख कुदरत के नव श्रंगार,
कर उठा कवि का ह्दय पुकार ।
तोड़ नीरसता का प्रतिबंध,
उठा लेखनी रचो कुछ छंद ।
प्रकृति का ये सौंदर्य अपार,
बनाए वसुधा सदा बहार ।
आह ! क्यों मनुज बना उपहास,
रचाये विध्वंशक इतिहास ।
स्वयं को समझ बड़ा बलवान,
धरा को बना रहा स्मशान ।
दिये कुदरत ने इसको फूल,
किन्तु लौटाये इसने शूल
बड़ा जिस आँचल तले हुआ
उसी में भरता आज धुआँ ।
क्षुधा तृप्ति तक माफ है भूल
बना है नाशक, सृष्टि समूल
छोड़ अब तू सारे उत्पात
स्वयं जी, जीने दे बदजात ।
समुन्नत विकसित हो हर जीव
करें मिल आओ वह तरतीव ।

२१. नदिया की धार में

छूटी पतवार मेरी, लहरों की मार में ।
डूब गई कश्ती प्यारी, नदिया की धार में ।

मुझको न राश आया छलिया किनारा,
तूफां ने थाम लिया, साहिलने मारा,
सब कुछ खोया मैंने, इस संसार में ।
डूब गई कश्ती प्यारी, नदिया की धार में ।

समझे थे साथ देगा, शायद ज़माना,
किन्तु यहाँ मुश्किल है, रिश्ते निभाना;
मुझको तो खार मिले, मौसमें बहार में ।
डूब गई कश्ती प्यारी, नदिया की धार में ।

कितने ही लोग यहाँ, ऐसे भी आते हैं
कारवां की धुंध में, गुबार बन जाते हैं,
घुटता रहा मैं ग़म की धुन्ध बेशुमार में ।
डूब गई कश्ती प्यारी, नदिया की धार में ।

टूट अरमान गये, ग़म न मनाऊँगा,
यादों में उनकी अब न, आँसू बहाऊँ गा ।
जश्न मनाऊँगा मैं, जीत का ही हार में ।
डूब गई कश्ती प्यारी, नदिया की धार में ।

२२. काहे बसे परदेश (लोकगीत)

कारी बदरिया छाई, घटा घिर आई,
सजनवा ! काहे बसे परदेश ?
पापी पपीहरा गाये, कोयलिया लुभाये
बलमवा ! मन को लगाये ठेस ।

अखियाँ बरसें जैसे बदरिया,
साजन लीन्हीं नाहिं खबरिया;
रूठ गये हमसे क्यों बालम
लागी क्या सौतन से नजरिया
आओ, अँधिरिया छाई बड़ी घबराई
सजनवा ! काहे बसे परदेश ?

मन चकई बन जाये रतियाँ,
कासे कहूँ मैं विरहा की बतियाँ;
पडे़ फुहार अगनवा मोरे
घन गरजत, धड़के है छतियाँ ।
देखो, पवन पुरवाई, मदन शर लाई;
सजनवा ! काहे बसे परदेश ?
ले संदेश चातकी बहना
मम प्रीतम से जा यों कहना;
प्यास बुझी सूखी धरती की
कब तक मुझे तृषित है रहना;
पाती न तुम्हारी आई, कि ऐसी भुलाई,
सजनवा ! काहे बसे परदेश ?

२३. रूठ गये बादल

रूठ गये बादल
सावन में भी रूठ गये ।
लुक-छुप, लुक-छुप झाँक रहे हैं
आसमान से ताक रहे हैं,
अवनी का आँगन है सूखा
और छान सब खाक रहे हैं
टूट गये संबल,
सावन में भी टूट गये ।

भूल गये हैं प्रीति पुरानी,
धरती बहना माँगे पानी;
सूना-सूना रक्षाबंधन
फीकी-फीकी चूनर धानी ।
सूख गये आँचल,
सावन में भी सूख गये ।

मोर पपीहे तुम्हें बुलायें,
जल बरसाओ प्यास बुझायें;
रिक्त हुए सरिता और सरवर
जन-वन सब आक्रन्द मचायें ।
सूख गये जंगल,
सावन में भी सूख गये ।

२४. होली आई रे

गाओ सब मिल गीत बसंती, होली आई रे ।
आओ-आओ मीत, बसंती होली आई रे ।
होली आई, होली आई, होली आई रे,
आई-आई, रंग-बिरंगी, होली आई रे ।

गली-गली में शोर मचा है,
झांझ, मजीरा, ढोल बजा है;
उड़े फुहारें पिचकारी से
बिना रंगे ना कोई बचा है ।
ये बसंत खुशियों की भरके, झोली लाई रे ।
आई-आई रंग-बिरंगी, होली आरे रे ।

सब मिल फाग कबीरा गावें,
पिचकारी भर रंग उड़ावें;
सजनी और सजनवा दोनों
इकदूजे पर प्यार लुटावें ।
होली नवल वधू की जैसे ड़ोली लाई रे ।
आई-आई रंग-बिरंगी, होली आई रे ।

मन में भरे बसंती खुशियाँ,
आज मनाओ सब रंग-रलियाँ;
वैमस्य की बात न करना
सजें प्यार से सारी गलियाँ ।
लिये मुखौटे, भंग पिये, हर टोली आई रे।
आई-आई रंग-बिरंगी, होली आई रे ।

२५. प्रकाश का पर्व

दीप, दीवाली के मन भाये,
नई उमंगे लेकर आये;
यह प्रकाश का पर्व अनूठा,
कलुष-कालिमा दूर भगाये;
सत का जन-जन में प्रचार हो,
दूर असत का अंधकार हो;
द्वेष भाव के महिषासुर सुर का
सारी दुनिया में संहार हो;
हो वसुधैव कुटुम्ब हमारा -
धरा जननि सबकी कहलाये ।
नव संवत के नव प्रभात में,
हो संचरित स्फूर्ति गात में;
पौरुष का आधार सत्य हो -
चढ़ें प्रगति-रथ एक साथ में;
धन्य-धन्य हो भारत माता
स्वर्ग उतर धरती पर आये ।
है पुकार भारत जन-जन की;
हर अतृप्त अधूरे पन की;
कहाँ गई वो शक्ति पुरातन
ढूँढ़ रहीं यादें बचपन की;
स्वर्गादपि गरीयसी जननी
भीख माँगने पर घर जाये ।

देश–वासियो ! होश में आओ,
जगद्गुरू का मान बढ़ाओ;
हुई लुप्त जो ज्ञान–सरस्वती
उसे उतार धरा पर लाओ ।
ज्ञान, शक्ति औ श्री तीनों
भारत फिर संगम बन जाये ।

२६. भ्रमर मचाये शोर

खिले फूल महके फुल-बगिया;
भ्रमर मचाये शोर ।
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

फूल-फूल तितली मंडरायें,
कलियन भँवरे अंग लगाये;
कमल कली में बँधे रह गये -
हुआ न अब तक भोर ।
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

कठ छेदी अलि कमल बँधायो,
गिरधर मुरलीधर कहलायो;
प्रीति रीति की महिमा देखो
हो गये प्रेम विभोर ।
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

काले भ्रमर श्याम भी काले,
राधावर कहलाने वाले;
माखन-दही चुराकर खाये,
बन गये माखन चोर ।
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

राधा शमा, श्याम परवाने,
कुसुमकली के मधुप दीवाने;
दोनों सुन्दर सुघड़ सलोने
छबि का ओर न छोर ।
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

श्याम सलोने ब्रज के रसिया,
मनमोहन राधा मनबसिया,
ग्वाल-बाल सबके मन भाये
यदु नंदन चित्त-चोर
गुन-गुन गाये चारों ओर ।

२७. धोखा दिया है

मुझे राह में तूने, धोखा दिया है ।
नहीं फिर संभलने का, मौका दिया है ।

तेरी याद के हमने नग्में चुने थे,
तेरे रूप के ताने-बाने बुने थे;
मगर तूने फिर से, पलट के न देखा
कहाँ से कहाँ, मुझको पहुँचा दिया है ।

कभी तुमने-हमने इरादा किया था,
सदा साथ रहने का, वादा किया था,
दिये सब भुला तूने, वादे इरादे
ये क्या बेरहम तूने, सौदा किया है ?

भुला दे जो कर प्यार, साथी वो कैसा ?
दुबा दे जो मंझ-धार, मांझी वो कैसा ?
मेरे टूटे दिल की भी, आहों को तूने
बड़ी बेरहम होके रौंदा किया है ।

२८. घात-प्रतिघात

कीचड़ फेका बहुत परस्पर
अब तो रोको हाथ सभी;
विधि सदनों में करो दिखाबा
मिलकर पीते रात सभी ।
जितने नेता उतने ही दल
भारत दल दल बना दिया,
मिलो शाम को रोज क्लबों में
गाली देते प्रातः सभी ।
कहलाते जनता के प्रतिनिधि
जन को मूरख बना रहे,
कभी न आते हाल पूछने
बाद इलेक्शन भ्रात सभी ।
संसद और विधान सभाओं
में केवल नारे बाजी;
भारी वेतन, लम्बा भत्ता
पाते हैं दिन-रात सभी ।
नहीं जरूरत लोक-तंत्र की
जन प्रतिनिधियों का क्या काम;
भ्रष्टाचारी हैं ये सारे
मोटी-चमड़ी गात सभी ।
मध्यम और निम्नवर्गी जन
बेकारी में सिसक रहे;
नेताजी को सुविधाओं की
मिले मुफ्त सौगात सभी ।

फैला है आतंक देश में
मरें सिपाही औ'जनता;
सेवकराम सुरक्षित
बॉडी, गार्ड सहें उत्पात सभी ।
'श्याम' न संभले क़दम तुम्हारे
नीति न बदली सड़ी-गली;
ईंट-पत्थरों से स्वागत की
होगी तुमसे बात सभी ।

२९. खयालों से कह दो

कोई कह दो, खयालों से कह दो !
यूँ दिलों में न आया करें;
कोई कह दो, सवालों से कह दो !
यूं जुबां पर न छाया करें ।
चुपके बैठा हुआ, याकि लेटा
मुझको पा हैं, खयालात जाते,
बिन बुलाये ही, महमान जैसी
मन की लेने मुलाकात आते;
बीती बातों की यादें दिलाके,
अब न हमको सताया करें ।
जब कभी टीस मन में है उठती,
ग़म के दरिया में डुबकी लगाये;
क्या कहें सोच की सोच खुद भी,
भीनी आँखों से आँसू बहाये;
याद करके जिन्हें जख्म रिसते
वो न लम्हात लाया करें ।
दौरे तूफाँ में नैया फँसे जब
ना लहर कोई साहिल पे लाये;
उनका होता मुहाफ़िज़ खुदाही
है भंवर जिनकी कश्ती डुबाये;
जब फँसा हो मुसीबत में इन्सां
तो न उसको रुलाया करें ।

बेरहम है, खयालों की दुनिया
चित्त को डाल चिन्ता में देती;
चिन्ता उससे बड़ी बेरहम है
ये किसी को न खातिर में लेती
करके ज़िन्दे को मुर्दे से बदतर
खाक़ में न मिलाया करें ।

३०. बहन का खत

भैया रे भैया, ओ मेरे भैया !
राखी के दिन, आ जाना ।
बैठी है बहना, आश लगाये ।
रक्षा सूत्र बँधा जाना ।
खेले हैं, हम तुम, एक ही अंगना,
एक ही पलना, झूले हैं;
डोली उठी, ससुराल को मेरी
आप मुझे क्यों भूले हैं;
आया रक्षाबंधन पावन
मेरा मान, बढ़ा जाना ।
बाँध के राखी, तिलक करूँगी
मुँह मीठा, करबाऊँगी;
लूँगी बलैयां, भैया तेरी,
लम्बी उमर, मनाऊँगी ।
युग-युग जीओ, मेरे भैया
भूला प्यार, जगा जाना ।
बाबुल मेरे, भूल गये क्यों,
क्यों बेटी, विसराई है ?
माँ की ममता, रूठ गई क्या ?
बेटी याद न आई है ?
आजा भैया, अखियाँ प्यासी
इनकी प्यास बुझा जाना ।

सावन की यादें हैं आतीं
अमवा तले के, वो झूले;
बचपन की वो प्यारी सखियाँ
जिनकी याद है मन छूलें
मेरे भैया, लेजा मुझको
फिर उनसे, मिलवा लाना ।

३१. मन की उमंगे

मन की उमंगें, दिल की तरंगें
तुमको रहीं पुकार,
जानेवाले वापस आजा
खुले हुए हैं द्वार ।

रूठ गये हैं हमसे पिया क्यों,
तोड़ गये हैं मेरा जिया क्यों ?
चले गये मुड़कर ना देखे
देती रही गुहार ।

सपनों में साजन हैं आते
आँखों में बादल बन छाते;
बाट देखती रहूँ सखी मैं
आँगन दिया बुहार ।

यह देखो पावसऋतु आई,
अंबर घोर घटा है छाई;
पवन चले पुरवैया, अँगना
भीनी पड़े फुहार ।

सुनो घटाओ, मेरी बहना !
साजन से जाकर युँ कहना;
साँसें सिसकें दिनवां-रतियाँ
लै-लै नाम तुहार ।

३२. थोड़ा-थोड़ा

थोड़ा-थोड़ा, थोड़ा-थोड़ा,
विरही मन को, मैंने मोड़ा ।
चिड़ियों की चहकन, फूलों की महकन,
फिर से जगाये, दिल में है धड़कन;
माने न अब तो ये, मन है निगोड़ा ।
कलियाँ खिली हैं, इतरा चली हैं,
भंवरों की गुंजन लागें भली हैं;
बस में नहीं मेरे, सपनों का घोड़ा ।
पायल बजी हैं, सखियाँ सजी हैं,
उन्मुक्त मन, किन्तु, आंखे लजी हैं;
करें क्या जवानी का, मौसम है थोड़ा ?
बचपन की सखियाँ, करती है बतियाँ
परदेशी बालम, बीतें न रतियाँ
क्यों साथ मेरा, सजन तुमने छोड़ा ?
विरहा मैं गाऊँ, पतियाँ लिखाऊँ,
संदेश प्रीतम को, अपना पठाऊँ
हुई भूल हमसे क्या, नाता जो तोड़ा ?
आजा बलमवा, लागा फगुनवा
बासंती रंग में, रंग दीजे मनवा;
कूके कोयलिया, लगे जैसे कोड़ा ।

३३. अनोखी बेला

मिल ले बहना बाबुल माँ से,
ये दिन फिर नहिं आयेगा,
हाथ है सौंपा जिसको तेरा
दूर बहुत ले जायेगा ।
छूट चलीं बचपन की सखियाँ,
दुनिया दर्शन मेला;
आज अनोखी बेला बहना,
आज अनोखी बेला ।
स्वाप्न हुए साकार तेरे
और माता की आशाएँ;
भार हटा बाबुल के सिर से
देते तुझे दुआएँ ।
किन्तु तेरा ये भैया बहना,
बिलकुल हुआ अकेला ।
आज अनोखी बेला बहना -
आज अनोखी बेला ।
जाकर बहन नये घर को,
आबाद खुशी से करना
सास-ससुर की झोली में -
फूलों की खुशियाँ भरना
ग़म का साया पास न आये,
हर दिन उगे नवेला,
आज अनोखी की बेला बहना
आज अनोखी की बेला ।

रोयें तेरी सखीं-सहेलीं,
धीरत कौन बँधाये !
आज बिछुड़ कर, ना जाने कब
हमको वक्त मिलाये;
बेटी सदा पराई होती,
रिश्तों का यह खेला ।
आज अनोखी की बेला बहना,
आज अनोखी की बेला ।

३४. भारत हमारी धड़कन

भारत हमारी है, धड़कन का नाम;
आओ करें हम, सौ-सौ सलाम ।
वतन ये हमारा, हमारी जमीं है,
है दुनिया से न्यारा, न कोई कमी है;
करें आओ हम सब, तरक्की के काम ।
बड़ी मस्त प्यारी-सी, इसकी हवा है;
सजाओ-संवारो, इसे नित नवा है,
भंवरों का गुजन है, कलियों के नाम ।
हमें आबो-दाना, इसी से मिला है,
नहीं हमको कोई भी, इससे गिला हैं,
बने देश खुशहाल, है ये इनाम ।
वतन माँ का आँचल है, आगोश माँ का,
पले जिसके नीचे, मिला जोश माँ का;
है जन्नत से बढ़कर, वतन का मकाम।
बँटने न देंगे, कभी हम वतन को,
उजड़ने न देंगे, कभी इस चमन को;
आयेंगे मिटकर भी, इसके ही काम
बहादुर बनो, देश के नौ जवानो!
कायर को मुर्दे से बदतर ही जानो;
जवांमर्दी का माने, लोहा तमाम ।
वतन की शमा पे जो, जलते रहे हैं
कफ़न बाँध सर पे, निकलते रहे हैं;
हे नम्मा मेरा, उन शहीदों के नाम ।

३५. बहारों से कह दो

कह दो - कह दो, बहारों से कह दो,
कुछ ठहरने को आया करें,
सोये अरमान दिल के जगा के
स्वप्न-सा न दिखाया करें;
देखते बीत जाती है, सुख की घड़ी,
उम्र दुःख के मीनारों की होती बड़ी;
सुख के साथी जहाँ में हजारों मिलें
ग़म के मारों की दुनियाँ में किसको पड़ी ।
कह दो - कह दो, हजारों से कह दो,
प्यार बाँटें व पाया करें ।
ग़ैर को न सही, किन्तु खुद के लिए
ऐ बहारो-चमन को सजाओ,
रंग भर दो, खिजां में निराले
ग़म का साया, जहाँ से हटाओ,
देख कर जिसको रोशन हों रातें
चाँद धरती पे लाया करें ।
है बड़ी सिर्फ़, दिल की अमीरी
मालोज़र की है, उसमें क्या गिनती,
मेरे मालिक दे सबको ये दौलत-
'श्याम' की तुझसे हर पल है विनती;
दूर नफ़रत जहाँ से हो सारी
फ़र्ज हम सब निभाया करें ।

३६. तेरे ही नाम

पत्तों की थिरकन,
चिड़ियों की चहकन,
भंवरो का गुंजन
फूलों की महकन;
कुदरत की दौलत तमाम
लिख दी है, तेरे ही नाम ।

देख तारों की बारात आई,
रात रानी की, ड़ोली सजाई;
चाँद बन चमके, गोरी का मुखड़ा
आसमानी चुनर है पिन्हाई;
शमा का उजाला, नज़र का ये प्याला,
अदा सकिया की, ये फूलों की माला;
महफिल की रौनक तमाम
लिख दी है, तेरे ही नाम ।

काली काली घटाओं का साया
देखकर मोर ज्यों मन लुभाया;
कूक कोयल की हलचल मचाये
आज फिर साथिया याद आया;
आजा पुकारूँ मैं, रास्ता निहारूँ मैं,
यादों में तेरी, क्या-क्या विचारूँ मैं;
बरसाती मौसम की शाम,
लिख दी है, तेरे ही नाम ।

३७. हम तरसते रहे

शेर : तुम्हारी शान में हमने, सजाई थी दिले महफिल
जलाई प्यार की शम-अँ न अब तक तुमने संग दिल

स्थायी :- बेरुखी उनकी इतनी बढ़ी 'श्याम' से
रुख बदल कर वो, आगे को चलते हुए,
उनके चेहरे पे चंदा चमकता रहा
हम तरसते रहे, चाँदनी के लिए ।
साकियाने है कैसा ये बदला लिया
मेरे होठों से प्याला, अलग कर दिया;
उनके अधरों पे मदिरा छलकती रही
हम तरसते रहे वारुणी के लिए ।
इस कदर बैठे हम से वो मुँहफेर कर,
हो गये हम तो हैरां उन्हें टेर कर;
गेसुओं की घटाएँ, घिरी ही रहीं
हम तरसते रहे, दामिनी के लिए ।
रूठना उनका हमको, बला हो गया,
कहिए क्या इसमें उनका भला हो गया;
भोर होते सितारे भी, बुझते गये
हम तरसते रहे, मानुनी के लिए
उनकी पायल की छम-छम हमें याद है,
उनके पाँवों की थिरकन हमें याद है;
उनकी साँसो में, सरगम मचलती रही
हम तरसते रहे, रागिनी के लिए ।

३८. कान्हा की होली

होली खेलन, नंद किशोर
आज ब्रज, गलियन आये हैं ।
संग में लाये, ग्वाल कन्हैया,
सब मिल नाचें, ता-ता थैया;
मची गलिन में धूम, गोपियन नैन बिछाये हैं ।

उड़ते रंग गुलाल-अबीरा,
गायें सब मिल, फाग-कबीरा;
खिले बसंती फूल, आज भंवरा मंडराये हैं ।

भरी पिचकारी कान्हा मारी,
राधा की भीगी सब सारी,
होली के रंग, रंगे ग्वाल-ग्वालियन मन भाये हैं ।

३९. जिन्दगी के सहारे

हम तेरी ज़िन्दगी के सहारे,
तुम मेरी ज़िन्दगी के सहारे;
क्यों हैं फिर ये, गिले सिकवे सारे?

मैं तो गर्दिश का मारा हुआ हूँ,
हर गली से नाकारा हुआ हूँ;
क्यों चले छोड़ यों बीच धारे ?

दिल की धड़कन को कैसे छिपाऊँ ,
आँख फरकन न, मैं रोक पाऊँ ;
तुम से उल्फ़त के हैं ये इशारे ।

यार निष्ठुर हैं, दुनिया के मेले,
खो न जायें कहीं, हम अकेले;
ग़म के दुर्दिन, न ऐसे दिखारे ।

रूठना राश, तेरा न आये,
याद तेरी, हमेशा सताये;
क्या यही वादे, थे वो तुम्हारे ?

४०. जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?

लड़खड़ा रहे हैं आज,
फिर मेरे क़दम,
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?
रूठ कर चले गये हैं;
फिर मेरे सनम ।
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?
हमने मान से उन्हें
बुलाया बार-बार,
प्रेम की दुहाई दी
की मिन्नतें हजार,
फिर भी हैं वो रिसाये हुए, हम से दम-ब-दम ।
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?
टूट कर बिखर गये
तो, मिल न सकेंगे;
छूटकर बिसर गये
तो, मिल न सकेंगे,
कश्ती तो ले गये हैं वो साहिल पे खड़े हम ।
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?
जायेंगे टूट ज़िन्दगी के
जब सभी भरम,
भटकेंगे तमन्नाएँ लिए
हम जनम जनम,
ये जानकर भी कम न हुए, उनके हैं सितम ।
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?

ये वक्त गया हाथ से
तो फिर न आयेगा;
जीना तो पड़ेगा ही वो
मरना कहायेगा;
हैं भटकी हुई राह पे वो, दिन हुआ खतम ।
जाने क्यों, जाने क्यों, जाने क्यों ?

४१. क्या बताएँ तुम्हें ?

क्या बताएँ तुम्हें, किस तरह हम,
ज़िन्दगी के सताये हुए हैं;
चोट अपनों ने दी है जो हमको
वो जिगर में समाये हुए हैं।

जिसको अपना बनाया सफ़र में
साथ उसने न मेरा निभाया;
हर बला को अकेले ही झेला
काम मेरे कभी वो न आया,
साथियो ! हाल मेरा न पूछो;
खुद को ग़म में डुबाये हुए हैं ।

साथ अपना भी ऐसा ही समझो,
केर और बेर हों साथ जैसे,
बेर झूमे लहर में है जब जब
ज़ख़्म होते हैं केले में जैसे;
है न अहसास इसका उन्हें कुछ,
वो तो मस्ती मैं छाये हुए हैं ।

टूटता जा रहा हूँ मैं हर पल
डूबता जा रहा हूँ मैं हर पल,
कब अँधेरों से फुर्सत मिलेगी
ढूँढ़ता जा रहा हूँ मैं हर पल;
बस यही ज़िन्दगी है हमारी,
अपने घर में पराये हुए हैं ।

४२. झूम लो साथियो

झूम लो साथियो, देखो आई बहार,
भर गया हर कली में, है रंगो-खुमार ।
पीत पल्लव हुए दूर शाखों से हैं,
जोड़ रिश्ता गये कोपलों से वो हैं;
ये लो अमराइयों में सुगंधी भरे
गीत भरने लगे कंठ कोयल के हैं ।
आज कुदरत ने कीया अनोखा सिंगार ।
झूम लो साथियो, देखो आई बहार ।
है धरा ओढ़ ली, पीली-पीली चुनर,
लग न जाये कहीं, आसमां की नज़र;
नृत्य करने लगी हैं परी-तितलियाँ
गुन-गुनाने लगे, प्रेम पूरित भ्रमर;
हँस रहे हैं सुमन, खोल होठों के द्वार ।
झूम लो साथियों, देखो आई बहार ।
खेत-वन-बाग फूलों-रंगों से भरे,
हैं लता-पेड़-पौधों, में पल्लव हरे;
लो दिशाएँ नवल, साज सजने लगीं
हर गली ढोल ढफ, राग फगुआ झरे;
आ गया है बसंत, ले के खुशियाँ अपार ।
झूम लो साथियो, देखो आई बहार ।
हर सुमन दे निमंत्रण रहा आज है,
उसके हँसने का अनुपम-सा अंदाज है;
झाँकने खिड़कियों से हैं कलियाँ लगीं
क्यारियों को, कि जिन पे, बड़ा नाज़ है ।
बाँटता है पवन, आज खुश्बू में प्यार ।
झूम लो साथियों, देखो आई बहार ।

४३. उल्फ़त के गीत

उल्फ़त के गीतों का लाया हूँ जाम ।
पीओं पिलाओ तमाम ।
हमको पतंगे ने मिटना सिखाया
शमा को कभी है न उसने बुझाया;
दिलों के संदेशें हैं रिश्तों के नाम
पीओ पिलाओ तमाम ।

बसंती हवाओं ने हमको पुकारा,
कि मस्ती का मौसम है आया दुबारा;
फूलों की खुशबू है, भ्रमरों के नाम ।
पीओ पिलाओ तमाम ।
यादों के दर्पन में तस्वीर तेरी,
आँखों के सपनों में तासीर तेरी;
साँसों की सरगम है, गीतो के नाम ।
पीओ पिलाओ तमाम ।
भंवर ने जो मांझी को मंझधार रोका,
तो लहरों ने बढ़कर उन्हें जा के टोका;
थिरकती ये लहरें, किनारों के नाम ।
पीओ पिलाओ तमाम ।
बहारों ने ख़त भेज हमको बुलाया,
कोयल ने संदेश गाकर सुनाया;
सुहानी ये रातें, अजीजों के नाम ।
पीओ पिलाओ तमाम ।

४४. मालिक एक हमारा है

जिसने मन्दिर-मस्जिद तोडे़
निर्दोषों को मारा है,
वो नादां ये नहीं समझते
मालिक एक हमारा है।

राम-रहीम कि ईश्वर-अल्लाह
हैं सब एक उसी के नाम;
आब कहो या जल कर मानो
दोनों पानी की पहचान;
बात नहीं वो इतनी समझें -
झूठा धर्म का नारा है ।

हैं संतान उसी की हम सब,
पिता वही हम सबका है;
झूठे सारे भेद-भाव ये
नाम सही बस रब का है;
हिन्दु-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई -
क्यों कर ये बँटवारा है ।

नेकी और बदी से मानव
बने फ़रिस्ता या शैतान;
मज़हब वही, बदी को तजकर
मानव बने जहाँ इन्सान ।
प्रेम करो, हर इक प्राणी से
प्रेम प्रभू को प्यारा है ।

४५. प्रेम की सगाई

हिन्दू हो या मुसलमां, दोनों हैं भाई-भाई ।
क्यों दिल के दरम्यां है, नफ़रत की आँधी आई ।
वाली जो एक सबका,
वह ही है, राम-रहमां;
संतान सब उसी की
जग के ये सारे इन्सां,
उसने तो अपनी रहमत, बिन फर्क है लुटाई ।
क्यों दिल के दरम्यां फिर, नफरत की आँधी आई ।
सुकरात-मूसा-ईसा,
गाँधी महात्मा प्यारे,
नफरत की आँधियों में
सारे गये है मोर;
कुर्बानी उनकी भी है, अब तक न रंग लाई ।
हिन्दू हो या मुसलमां, दोनों हैं भाई-भाई ।
उसने सभी खज़ाने,
बेमोल ही दिये हैं;
उनमें न भेद उसने
कीमत लगा किये हैं;
बारिश व चाँद-सूरज, देते हैं सब गवाही ।
हिन्दू हो या मुसलमां, दोनों हैं भाई-भाई ।
मालिक ने कोई मज़हब
है खुद नहीं बनाया,
पैगम्बरों ने उसके
जीना हमें सिखाया;

नेकी व नेकनीयत, हमने है खुद गंवाई ।
हिन्दू हो या मुसलमां, दोनों हैं भाई-भाई ।
इन्सानियत के नाते
कुछ तो विचार करिये,
खुद को लगे बुरा जो
बर्ताव वो न करिये;
सबसे भली है यारो, बस प्रेम की सगाई ।
हिन्दू हो या मुसलमां, दोनों हैं भाई-भाई ।

४६. आतिश (आग)

कैसी फैली है आतिश ये यारो ।
क्यों ये घर आज फिर जल रहे हैं ?
हर तरफ आग ही आग देखो !
हम खड़े हाथ ही मल रहे हैं ।
    क्या इसी हेतु कुर्बानियाँ दीं,
    देश के वीर रण बाँकुरों ने;
    स्वप्न में भी न होगा ये सोचा
    हिन्द के हम वतन सरफिरों ने;
आग हमने है ऐसी लगाई-
उनके जन्नत में दिल जल रहे हैं ।
    किसने किसको है फिर आज मारा,
    बह रही लाल रंग की है धारा;
    कत्ल इन्सानियत हो रही है
    बन गया संग-दिल देश सारा
ऐसी आई है नफ़रत की आँधी
रूख विश्वास के हिल रहे हैं ।
    देख दुश्मन हुए भाई-भाई,
    भूल बैठे हैं सारी सगाई;
    एकता प्रेम की बात छोड़ो
    रूठ हमसे गई मानसाई;
छेडकर जाति धर्मों के झगड़े
आज खुद को ही हम छल रहे हैं

घर किसी का वहाँ जल रहा है,
देखिये वो धुआँ उठ रहा है;
बन गया आदमी है दरिन्दा,
चाल शैतान की चल रहा है;
उफ़ ! ये क्यों बीज विष के हमारे
अब दिलों बीच फिर पल रहे हैं ।

४७. बीमार चमन

बीमार चमन बदनाम हवा,
कलियों का खिलना क्यों कर हो;
हम भूल-चुकें हैं रश्मे-वफ़ा
दिल, दिल से मिलना क्यों कर हो ?
ये देश दिलों का दरिया है,
कितने ही तूफाँ झेल चुका;
हर मौज की अंगड़ाई देखी
हर खेल नया है खेल चुका;
पर अब है बहुत बदली सी फ़िजा
मंजिल पे पहुँचना क्यों कर हो ?
मस्जिद के उलेमा मस्जिद से
मंदिर के पुजारी मंदिर से;
नफ़रत को आग उगलते हैं
तूफ़ान उठाते हैं फिर से;
इस मर्ज़ की जब तक हो न दवा
उल्फ़त का संभलना क्यों कर हो ?
इन्सां का लहू जब इक-साँ है
फिर कोमों के ये वाड़े क्यों ?
हर दर्द हमारा इक-साँ है
राहों में काँटे गाड़े क्यों ?
जब तक हम एक-दूजे से खफ़ा
मन मैल निकलना क्यों कर हो ?

४८. इन्हें मत भूलना यारो

वतन के जां निसारों ने, वतन के पहरेदारों ने
लहू देकर बढ़ाया है, हमारी शानो शौकत को ।
इन्हें मत भूलना यारो, इन्हें मत भूलना यारो !
वो बर्फीले तूफ़ानों में, घने जंगल पहाड़ो में
न करके जान की परवा, दिखाया अपने कौवत को;
इन्हें मत भूलना यारों, इन्हें मत भूलना यारो !
हमारी वादिये कश्मीर, हिमाला के शिखर ऊँचे
अरे लद्दाख नेफा भी, लहू देकर के हैं सींचे;
इन्हें मत भूलना यारो, इन्हें मत भूलना यारो ।
सहारा बाप का कोई, कोई माँ का दुलारा था;
किसी की माँग का मोती, कोई बहना का प्यारा था;
इन्हें मत भूलना यारो, इन्हें मत भूलना यारो ।
भुलाकर सारे रिश्तों को, निभाया वतन से रिश्ता
हुए जन्नत नशीं वो, खुद को कर कुर्बान अहिस्ता
इन्हें मत भूलना यारो, इन्हें मत भूलना यारो ।

४९. ज़िन्दगी के फसाने

गुज़र जाती हैं ज़िन्दगियाँ फ़साने ही हैं रह जाते ।
कहानी उन खण्डहरों की हैं अफसाने ही दुहराते।
कभी हम थे किसी के
और कोई भी हमारा था,
सहारे थे किसी के हम
कोई अपना सहारा था;
टपके जाते है फिर आँसू, पुरानी याद के आते ।
तुम्हारा क्या, बसा ली होगी
तुमने और इक दुनिया;
नई चाहत, नई मंजिल
नई शोहरत नई खुशियाँ;
उजड़कर रह गई दुनिया, हमारी आपके जाते ।
करें किससे शिकायत हम
कहाँ फरियाद ले जायें;
जिन्हें सुनना नहीं कुछ भी
उन्हें क्या खाक़ समझाये;
न हों जिनका कोई मांझी, भंवर में डूब हैं जाते ।

५०. उनकी बातें

फिर वही दर्द, वही याद
वही दिन रातें;
बंद आँखों में, उभर
आती हैं, उनकी बातें ।
उनका हँसना व चहकना
और बिगड़ना भी कभी;
आज भी याद रही हैं,
हमें उनकी बातें ।
जब भी ये दिल मेरा,
तन्हा मुझे पा जाता है,
छेड़ देता है मेरी रूह
से, उनकी बातें ।
क्या करूँ आप से,
बीते हुए, लम्हों का बयाँ;
सबसे प्यारी हैं धरोहर
मेरी, उनकी बातें ।
मैं तो आया ही जहाँ में -
हूँ, सुलगने के लिए;
अब तो खुद से ही किया
करता हूँ, उनकी बातें ।
लाख अरमान मेरे टूट
गये, खाक़ हुए;
पर न शिकवें में
करूँगा, कभी उनकी बातें ।

५१. ख़त तेरे नाम

मुझे ज़िन्दगी में दी ये, जिल्लत तमाम ।
ओ मालिक ! तेरे इस करम को सलाम ।
चमन का है हर फूल मुझसे कहे
उदासी में क्यों 'श्याम' डूबा रहे ।
मेरी ये इबादत है ग़म का पयाम ।

ये गीतों का अंदाज मुझको दिया क्यों ?
दिया भी तो हर साज फीका दिया क्यों ?
मेरे गीत और साज, सारे अनाम ।

जमाने को सारी ये खुशियाँ मिलें
मुझे ना किसी से हैं कोई गिले;
मेरी हर शिकायत का खत तेरे नाम ।

बता इतना मुझको, मैं मज़बूर क्यों हूँ ?
पिता तू है तो तुझसे मैं दूर क्यों हूँ ?
मेरा दर्द गीतों में, तेरे ही नाम ।

५२. प्रेम पिपासा

प्रेम पिपासा भरे उसासा, आशा के नहिं दीप जले ।
मन अभिलाषा, बनी निराशा, वो नहिं आये रात ढले ।
निश-दिन बाट निहारूँ उनकी,
सखि साजन क्यों रूठ गये ?
पावस बीती, शरद सिरानी,
पतझड़ शिशिर बसंत गये;
आई ग्रीषम, तन झुलसाने, अन्तर मन की प्यास खले।
मन अभिलाषा बनी निराशा, वो नहिं आये रात ढले ।
छल-छल छलकें पल-पल अँखियाँ
अँसुअन भीगें मेरी छतियाँ;
टीस उठत मेरे जियरा में
करके याद पिया की बतियाँ;
लिख-लिख पतियाँ, धरी सिराहने, अधर अधूरा राग पले।
मन अभिलाषा, बनी निराशा, वो नहिं आये रात ढले ।
ऋतु आये ऋतु जाये सजना,
खनक कहें मुझसे ये कंगना;
प्रीतम तेरा तुझको भूला
सूना तेरा घर और अंगना;
बारह मासा, मिली हताशा, मन घबराये गात जले ।
मन अभिलाषा, बनी निराशा, वो नहिं आये रात ढले ।

कैसे पाऊँ खबर तुम्हारी,
बालम वाट निहारत हारी;
धीर बँधाऊँ कैसे खुद को
अक्ल गई मेरी है मारी;
कबने नगर संदेश पठाऊँ, कैसे मन की आश फले ?
मन अभिलाषा, बनी निराशा, वो नहिं आये रात ढले ।

५३. वन्दे मातरम्

वन्दन है मातृभूमि का,
ये वन्दे मातरम्;
चंदन है मातृभूमि का,
ये वन्दे मातरम् ।
फाँसी पे चढ़ गये जो
गाके, वन्दे मातरम्
उनके लहू की आन है,
ये वन्दे मातरम् ।
नारा या गीत ही नहीं,
स्वातंत्र्य मंत्र है;
वैदिक ऋचा समान है,
ये वन्दे मातरम् ।
मजहब की आड़ लेके
देश को न बाँटिये;
मजहब से भी महान् है
ये वन्दे मातरम् ।
जिन लफ़्जों से जुनू चढ़े
है देश के लिए
वो धधकती मशाल है
ये वन्दे मातरम् ।
जिस ईश ने संसार की,
सृष्टि है ये रची,
उसके गुणों का गान है
ये वन्दे मातरम्
हम एक होके गायेंगे,
ये वन्दे मातरम्;
पहचान भारतीयता की,
वन्दे, वन्दे मातरम् ।

५४. आब-हवा रोगिष्ट है

भ्रष्ट है वो ध्रष्ट है,
जूठन-सा अवशिष्ट है;
दल तो चाहे कोई भी हो
पोल खोलना इष्ट है ।

रोज घोटाले ये करते,
देश लूट कर घर भरते;
बडे़ फरेबी ये रहवर
इन्हें समझना क्लिष्ट है ।

महँगाई में है पिसती,
पर बेचारी चुप रहती;
घूँट खून के पी जाती
जनता कितनी शिष्ट है ।

मातेले हैं साँड, यहाँ
राज कर रहे भाँड़ यहाँ;
हो जनतंत्र स्वस्थ कैसे ।
आब-हवा रोगिष्ट है ।

५५. प्रथम प्रेम ही, है ये मेरा

माँगता मैं न चंदा सितारा ।
माँगता मैं न संसार सारा ।
प्रथम प्रेम ही, है ये मेरा,
मैं न चाहूँगा, इन्कार तेरा ।

तुझको रखूँगा, यूँ अपने दिल में,
चाँदनी जैसे, चंदा किरन में;
सूरतें मैंने देखी हजारों
किन्तु, दिल में मेरे वास तेरा ।

खुद को पाता हूँ जब मैं अकेला,
दिल में आया करे ख्वाब तेरा;
मैं न चाहूँ जहाँ भर की खुशियाँ
चाहता सिर्फ हूँ हाथ तेरा ।

होगी चाहत भरी ज़िन्दगी ये,
छूने पाये न ग़म का अँधेरा;
ये सफ़र होगा बिलकुल ही आशां
हाथ में हाथ हो तेरा मेरा ।

५६. अपनी जीवन डोर

मैंने तुम्हारे हाथ में दे दी, अपनी जीवन डोर ।
चैन चुराके भूल गये क्यों, ओ मेरे चित चोर ?

आती याद मुझे हैं हर फल,
यार तुम्हारी बातें;
कितनी छोटी हो जाती थी
प्रिये हमारी रातें;
रोज उनींदी अँखियों में ही, हो जाती थी भोर ।
चैन चुरा के भूल गये क्यों, ओ मेरे चित्त चोर !

बड़े भाग्य से मिलन हुआ था,
यार तुम्हारा मेरा;
तुमको पाकर दूर हुआ था,
मन का गहन अँधेरा;
नाच उठा था तुम्हें देखकर, ये मेरा मन मोर ।
चैन चुराके भूल गये क्यों, ओ मेरे चित्त चोर ।

कैसे भूलें साथ तुम्हारे
बीत गई जो घड़ियाँ;
यादें सारी बन जाती हैं,
अब आँसू की लड़ियाँ;
जख़्म गई बन, कारे कज़रारे नैनों की कोर ।
चैन चुराकर भूल गये क्यों, ओ मेरे चित्त चोर ?

याद कर लिया करिये
मुझको, भी तो कभी हुजूर;
मन से दूर नहीं मैं तुमसे,
तन से दूर जरुर;
कभी–कभी तो रुख अपना भी, कर लीजे इस ओर ।
चैन चुराकर भूल गये क्यों, ओ मेरे चित्त चोर ।

५७. सपने बिखर रहे

आज देश है बंदी गृह में,
सपने बिखर रहे;
उजड़े गाँव, नगर वस्ती की
हद से गुज़र रहे ।
रोज बढ़े महँगाई ऐसी
उफ़ निकले मुख से;
असफल हैं सारे आयोजन
बसर करें कैसे ?
घरवाली के चेहरे पर
हर दम ये फिकर रहे ।
प्रजातंत्र का गला घोटते
जनसेवक मतवारे;
जनता है कराहती लेकिन
इनके हैं पौवारे ।
इन चोरों की भारत के,
धन पर है नज़र रहे ।
कर चोरी, रिश्वत, घोटालों-
का धंधा विकसा है;
कोई नहीं पूछता काला -
धन, यारो किसका है ?
कान पकड़िये इन चोरों के
क्यों ये बिफर रहे ?
अखबारों में किस्से अस्मत
लुटने के नित आयें;
जन प्रतिनिधि भी महिलाओं
की लाज बचा ना पाये;
उच्च पदों की महिलाओं के
पानी उतर रहे ।

५८. नव पल्लव

नव पल्लव परिधान विटप
कितने सुन्दर लगते हैं ।
अरुण-हरित आभूषण मण्डित
मन हर्षित करते हैं ।

पावस के अमृत-जल सिंचित
हरे हुए वन बाग,
धरती ने नवजीवन पाया -
अधर मल्हारी राग;
जल-गर्भित घन, श्याम-नील
झर-झर, झरझर झरते हैं ।

दादुर मोर पपैया बोले
और चातक मन भाये;
चम-चम चमके गगन बिजुरिया
विरहिन मन घबराये;
लुक-छिप करते मेघ और
चंदा मन को हरते हैं ।

धरती-ओढ़े हरित चुनरिया
दुल्हन-सी सजि आई;
लाल-मखमली वीर बहूटी
निकल धरा से आई;
हर्षित, पुलकित कृषक खेत
की ओर गमन करते हैं ।

५९. कजरारे बादल

उत रोयें कजरारे बादल, इत कजरारे नैन,
चातक मनहिं लुभाये चंदा, तड़पे सारी रैन ।

सावन उमड़-घुमड़ घन बरसे
चले पवन झकझोर,
कुहू-कुहू कोयलिया बोले
टहुका टहुका मोर;
पी की याद सताये निशि दिन, पड़े न पल भर चैन
उत रोयें कजरारे बादल, इत कजरारे नैन ।

मूदे नैन सपन जग देखे
और मैं अखियाँ खोल,
पलक द्वार से प्रीतम आयें
बोलें मधुरे बोल;
उनकी छाया मूर्ति बुलावे, करि-करि हमको सैन ।
उत रोयें कजरारे बादल, इत कजरारे नैन ।

आश लगाये मधुर मिलन की,
देखूँ पी की राह;
बीत जाय जब रात उनींदी,
मुख से निकले आह;
भूल गई मैं सुध-बुध सजनी, कढै न मुँह से बैन ।
उत रोयें कजरारे बादल, इत कजरोर नैन ।

६०. गीतों के दीप जले

गीतों के दीप जले
अन देखी राहों में;
ख्वाबों के फूल खिले
पलकों की छावों में ।

धरते धरा पे पाँव
उड़ते आकाश में;
छूने निस्मीम को
मंजिल की आश में;
बगलों की पाँत चले
अंबर की राहों में ।

कल्पित ऊँचाइयों को
छूने का लोभ किया;
धरती पर आन गिरे
मनने तब छोभ किया;
मुक्ता अनमोल मिले
अंबुधि अवगाहों में ।

दर्पन दिल टूट गया,
संबल भी छूट गया;
किश्मत ने साथ छोड़ा,
जब से रब रूठ गया;
भारी उन्माद पले-
सहमी निगाहों में ।

६१. बस अब और नहीं

बहुत हो चुका घन घमंड रब
बस, अब और नहीं;
देख लिया तांडव प्रचंड तव,
बस, अब और नहीं ।
केवल है चुनाव तक झाँकी,
बाकी सिर्फ दिखावा है;
वादे, वादे रहे आज तक,
कैसा गजब छलाबा है;
धनी बात के हुए, आप कब?
बस, अब और नहीं ।
देश हुआ आजाद किन्तु,
बहुमत को लाभ, न मिल पाया;
गिने-चुने सब, फसल-चर गये
जन का पेट न, भर पाया;
तिकड़म और गठ़जोड़ सदा नव
बस अब और नहीं ।
गन्दी-झुग्गी झोपड़ियों में,
बेवस कितने जन रहते;
गर्मी-वर्षा-शीत आदि की,
मार विवस होकर सहते;
मेहनत उनकी, लाभ तुम्हें सब,
बस, अब और नहीं ।
जागो जन-जन, उठो नींद से,
कुंभकर्ण बन, मत सोओ;
आगे बढ़ हक, अपना छीनो,
बैठ भाग्य पर, मत रोओ;
सिंह नाद का, करो घोर रब
बस, अब और नहीं ।

६२. रे मन अलगारी

बढ़ते रहो समय के पथ पर,
रे मन अलगारी ।
होगी सफल तपस्या इक दिन,
क्यों हिम्मत हारी ?
राहें आज भले कंटक मय
झंझावात चले,
काली रात अमावस में भी
मन का दीप जले;
घोर अंधेरी निशा गये
है, दिन की तैयारी ।
सपने सुप्त न होने पायें
उन्हें जगाना है;
नई उमंगो, आशाओं की
ज्योति जलाना है;
भूल गये क्यों ? अतुलितबल है,
तुम में नर–नारी ।
बुलबुल गायें, गीत राह में,
कोयलियाँ बोलें;
मोर–पपीहे, तेरे कानों
में मिसरी घोलें;
करे चराचर, तेरा स्वागत
फूल भरे थारी ।
जो श्रम की नौका में चढ़कर
दरिया पार करे,
साहस की पतवार बनाकर
निर्भय सफर करे;
मंजिल उसकी बाट देखती
कैसी लाचारी ?

६३. चारों तरफ अँधेरा

है चारों तरफ देश में इस वक्त अँधेरा ।
जन-जन है सोच में कि, जाने कब हो सबेरा ।

जिसको भी देखिये वही
दल दल में फँसा है,
निज स्वार्थ का ही भाव
अब हर मन में बसा है;
खुद को ही छल रहा है, समझ, लूट लुटेरा
जन-जन....

इस देश की कमान हम
जिनको भी हैं देते
मुँह ढाँप वही नींद में
बेफिक्र हैं सोते;
इनको जगाओ हम वतन, गफ़लत ने क्यों घेरा ?
जन-जन...

आजादी मिली जंग में
कुर्बानियाँ हुई;
लेकिन सुराज में न
कामयावियाँ हुई;
बापू का गया टूट बंधु, स्वप्न अनेरा ।
जन-जन...

हम सोचते थे आयेगी
बहार एक दिन,
हर फूल खिल उठेगा
महक जायेगा चमन;
अफ़सोस बाग में किया, पतझड़ ने बसेरा ।
जन–जन...

दुनियाँ में संस्कृति हमारी,
ज्येष्ठ रही है;
परदेशियों ने भूरि–भूरि
श्रेष्ठ कही है;
क्यों पश्चिमी नकल का लगा, शौक घनेरा
जन–जन...

६४. मत उगलो विष

मत उगलो विष, नाम धर्म के, मानव बनिये भाई ।
गले मिलो सब, भारतवासी, करके प्रेम सगाई ।
रोजी-रोटी चैन न लेने
देती, सभी चकित हैं;
आँख दिखाती महँगाई की,
खाकर मार व्यथित हैं;
भाग दूसरों का, मत छीनो, कर धारण निठुराई ।
गले मिलो...
जो तेरा दुःख, वही है मेरा
मेरी खुशी है तेरी;
कैसी विषम बयार चली है,
बढ़ गई पीर घनेरी;
खुद ही हमने, अपने हाथों, घर में आग लगाई ।
गले मिलो...
कौन है हिन्दू, कौन मुसलमां,
कौन सिक्ख ईसाई?
साथ न आये कोई मजहब
नाहक लड़ो लड़ाई;
भारतमाता, एक हमारी, हम हैं भाई-भाई ।
गले मिलो...
नहीं चाहिए मंदिर-मस्जिद
गुरुद्वारों की हेली,
जिनके नाम अभी तक हमने
खूब होलियाँ खेली;
नमक न छिड़को, फिर ज़ख्मों पर, बनकर क्रूर कसाई ।
गले मिलो...

६५. हम सफर बन चलूँगा

हम सफर बन चलूँगा, सफर में सदा,
साथ तुम हो यकीं ये दिला दीजिए;
जान हाजिर मेरी, आपके वास्ते
फैसला आप, अपना सुना दीजिए ।

तुमको देखा सदा, तुमको चाहा सदा,
जैसे चातक है, चंदा को देखा करे;
मेरी नज़रों से ओझल न होना कभी -
अपने ख्वाबों में मुझको बसा लीजिए ।

कनखियों से कभी, देखते आप जब
मेरा मनमोर खुस हो, थिरकने लगे;
रू-ब-रू हो मिलन तो तसल्ली बँधे
भड़के शोलों कोअब ना, हवा दीजिए ।

रास्ते अपने-अपने, सभी के मगर
एक मंज़िल है, इसमें न संदेह कुछ;
होगी आसान राहें, अगर साथ हो
मुझको हमराही अपना, बना लीजिए ।

६६. चलते-चलते

चलते-चलते शाम हो गई,
पीड़ा मेरे नाम हो गई;
शुष्क हृदय रह गया असिंचित -
आँख छलकता जाम हो गई ।
रास न आई मुझे ज़िन्दगी,
निकली हर उम्मीद ठगारी;
बीत गई यौवन की घड़ियाँ
अब ढलान की आई बारी;
डगर ढूँढ़ता रहा मिलन की,
प्रेम गली बदनाम हो गई ।
जलता रहा दिया बनकर मैं
साथ न छोड़ा किन्तु तिमिर ने;
संघर्षों से रहा जूझता
पीठ दिखाई हाय उमर ने;
मिली हार जीवन के पथ पर
दौड़ सभी नाकाम हो गई ।
कर्म करो निष्काम भाव से,
हमें सिखाती भगवद्गीता;
किन्तु कामना घट भरने में
है ये सारा जीवन बीता;
मैली-चादर देख कहूँ अब
भूल बड़ी हे राम हो गई ।

६७. अभियान गीत

देश भक्ति हम जन-जन का
अभियान बनायेंगे ।
सपनों से भी प्यारा
हिन्दुस्तान बनायेंगे ।

कोई न हो जब, नंगा भूखा
कोई न अश्रु बहाये,
रोटी कपड़ा मिले सभी को
सिर पर छत के साये;
अपनी मेहनत को अपना
भगवान बनायेंगे ।

ईश्वर एक पिता है सबका
हम उसकी संतान,
नहीं समझते जो यह रिश्ता
वे सब है नादान;
देश को समरसता का,
हम उद्यान बनायेंगे ।

कृषक और मजदूर बनेंगे
जब खुशहाल हमारे,
घर-घर दीप जले शिक्षा का
झूम उठें गलियारे;
सर्वे भवन्तु सुखिनः
का, दिनमान उगायेंगे ।

पोषणछम आहार मिले,
सब बच्चे ताक़तवर हों,
गाँव-गाँव में किलकारी से
भरे हुए सब घर हों;
देश का, बच्चा-बच्चा
हम बलवान बनायेंगे ।

भारत का प्रत्येक नागरिक
शिक्षित और जाग्रत हो,
चकित बने यह दुनिया सारी
देश तरक्की रत हो;
फिर महान गौरव गाथा की,
शान बढायेंगे ।

६८. प्यार हो मेरे दिल में

प्यार हो मेरे दिल में, सभी के लिए ।
एक ही हो नज़र, हर किसी के लिए ।

दु:ख में रोऊँ व सुख में न, इतराऊँ मैं,
मेरे मालिक तुझे, भूल जाऊँ न मैं;
कुछ भी सहना पड़े, ज़िन्दगी के लिए ।

सोया अब तक रहा, खोया अब तक रहा,
मोह–माया का मल, ढोया अब तक रहा;
वक्त कुछ ना दिया, बन्दगी के लिए ।

मौज–मस्ती किया, खूब खाया पिया,
और का भाग भी, कर हड़प चल दिया;
छोड़ नेकी जिया, हर बदी के लिए ।

तब न आई अकल, हो रहा अब विकल,
स्वर्ण युग ज़िन्दगी का, गया जब निकल;
ये रहा सिलसिला, आदमी के लिए ।

६९. रहे लड़खड़ा हैं हम

उसने शराब पी है, रहे लड़खड़ा हैं हम ।
होंगे शुरु खुदाए-करम उसके फिर सितम ।
पीकर के होश खोये हुए, जब वो आयेगा,
देकर टकोर द्वार को, फिर खट खटायेगा;
घबराई डरी हुई मैं, खोलूँगी जब दुआर
देकर हजार गालियाँ रुत्वा जमायेगा;
जायेंगे टूट ज़िन्दगी के, मेरे सब भरम ।
उसने शराब पी है रहे लड़खड़ा है हम ।
ऐ मालिके जहान ! ये, इन्साफ क्या किया,
औरत को मज़बूरी के सिवा तूने क्या दिया ?
मर्दो को सारे हक दिए, गिनगिन के बेशुमार
वल्लाह क्या न्याय का है, हक अदा किया,
हम पे तमाम पाबन्दियाँ, उनपे सब करम ।
उसने शराब पी है, रहे लड़खड़ा है हम ।
कहकर तलाक तीन बार, छूट सकें वो,
औरत की आन-बान सभी, लूट सकें वो;
कितनी भी शादियाँ करें, उनको है इख्तियार,
इन्सानियत के बंधनों से छूट सकें वो;
होते रहेंगे कब तलक, औरत पे ये जुलम ।
उसने शराब पी है, रहे लड़खड़ा हैं हम ।
जद्दोजहद की ज़िन्दगी हमारे लिए है,
लौंडी-सी सेवा-चाकरी, हमारे लिए है ।
घुट-घुट के सुलगना, न कभी उफ़ भी होठ से
खाविन्द की आबारगी, हमारे लिए है;
दोज़ख है यहाँ, क्या बुने, ज़न्नत के ख़्वाब हम ।
उसने शराब पी है, रहे लड़खड़ा हैं हम ।

७०. जिनकी पीड़ा को हमने

जिनकी पीड़ा को हमने, लगाया गले ।
वो ग़मों से हमारे हैं, घबरा गये;
झोलियों हमने खुशियों से, जिनकी भरीं
मुश्किलों से हमारी, वो चकरा गये ।

धूप से भी पसीना जो आया उन्हें,
तान कर छतरी, हमने है साया किया;
खून जब भी हमारे, जिगर से बहा -
देख कतरों को मेरे, वो कतरा गये ।

कुछ दिखावा तो कर, साथ दे या न दे,
और मेरे करम का, सिला भी न दे;
फिर न हमको शिकायत, ये होगी कभी -
होके मगरूर हम से, वो इतरा गये ।

हमने उनसे कभी, कुछ न, माँगा किया
जिस तरह जी सका, उस तरह जी लिया
इम्तहाँ देते-देते, उमर हो चली -
वक्त पड़ने पे, हमको वो, ठुकरा गये ।

७१. युग नदी किनारे

हम तुम हैं, युग नदी किनारे।
तड़पें ज्यों चकई-चकवा रे।
रहें सामने मिलें न फिर भी
विधि ने कैसा खेल रचा रे !
हम सरि को सागर पहुँचाये,
बन कहांर डोली ले जायें,
गिरिवर सुता जलधि दोनों का
साक्षी बनकर मेल करायें,
युग-युग से यह जिम्मेदारी
फ़र्ज समझ हम रहे निभारे !
जल सानिध्य अतृप्त अधर हैं,
बीते निशि के तीन पहर हैं;
खुले-अधखुले नयन ढूँढ़ते
जीवन की अन्जान डगर हैं;
अन्तिम प्रहर, थकित हैं तन-मन
प्रकट न होती मौन व्यथा रे ।
निर्जन बीहड़ कहीं राह में,
गाँव-नगर का दर्द आह में,
नदिया निकट, विकट है संकट
डूबे धन-जन इस प्रवाह में;
वह अपनी अनमोल धरोहर
छूट गई किस ठौर कहाँ रे !

कितनी संस्कृतियाँ है पनपी,
जिन्हें कालक्रम गया निगल है;
आते याद पुरातन वैभव
होता मन अत्यंत विकल है;
अपने साथ संजोई हमने –
इतिहासों की क्रूर कथा रे ।

७२. ऋतु बासंती आई

कली-कली खिल उठी फूल बन
ऋतु बासंती आई ।
धरती ओढ़े पीत चुनरिया
दुल्हन बन मुस्काई ।

गई शीत की ठिठुरन सारी
पवन चले मनुहारी,
भरे कुलांचे मनवा पी की
छुअन लगे अति प्यारी;
अल्हड़ तन गदराय गुजरिया
मन ही मन शरमाई ।

कुहू-कुहू बोले कोयलिया
बुलबुल गीत सुनाये,
कल कल कलरव, खगवृंदो का
मुनि जन ध्यान डिगाये;
उठा बसंती, धनु कुसुमाकर
सुमन-बाण बरसाई ।

गायें गुन-गुन, भ्रमर संवरिया
फूल-फूल मंडरायें,
तितली नाचें, झूम-झूम कर
कलियाँ मन मुस्कायें;

फगुआ राग उठे गलियन से
ध्वनि ढफ-ढोल सुहाई ।

तरुवर तन, हरिताभ-अरुण
पल्लव लागें मन भाये;
देखो तो, अमवा बगियन में
हैं कैसे बौराये !
सभर-यौवन ज्यों मादकता
पाय चले इतराई ।

७३. भाई-भाई हैं हम

कैसा ये सिलसिला, जंगलीयत का है,
टूटता हौसला, नेकनीयत का है ।
आज इन्सानियत होके जख्मी पड़ी
ऐसा ये फैसला आदमीयत का है ।

जी रहा आदमी, आदमी से ही डर,
खौफ़ भारी गया उसके दिल में है भर;
सरहदों की बना उसने दीवार ली;
कौम के वाड़ो में, घिर गया इस कदर।

चाँद पर तो पहुँच, आदमी है गया,
अब मिशन उसका, माना है मंगल नया;
जीत पाया दिलों को है, अब तक न वो
स्नेह का छूट उससे है संबल गया ।

मेरे मालिक बनाया है-इन्सान क्यों ?
ग़र बनाया तो दी, अक्ल ही उसको क्यों ?
बुद्धुओं ने उजाड़ी न बगिया कभी -
अक्लमंदी का चोंगा पिन्हाया ही क्यों

आज तक जंग और, जो भी दंगे हुए,
बुद्धिशाली दिमागों की, थी वो उपज;
सारा इतिहास साक्षी, ज़माने में है
बुद्धिमानों को अब तक, न आई समझ ।

अब बहुत हो चुका, अपने रोको कदम,
यदि जलाना, जलाओ ये ज़ुल्मो सितम;
पाट दो नफ़रतो की सभी खाइयाँ
करदो बहसत सदा के लिए ही खतम ।

बाँटते जा रहे क्यों, दिलों को है हम
खून से खून का कर के रिश्ता खतम;
नाम कितने भी हो, हैं बली (पिता)एक ही–
आओ मिल लें गले, भाई–भाई हैं हम ।

७४. तेरी चाह में

तेरी चाह में, मेरे हम सफ़र
तुझे याद यूँ मैं, किया करुँ ;
मेरे रू-ब-रू जो न हो कभी
तेरा नाम ही, मैं लिया करूँ ।

है ये आरजू, तेरा साथ हो,
मेरे हाथ में, तेरा हाथ हो;
तेरे जिस्म पे हो मेरी नजर
तेरे हुश्न को, मैं पिया करूँ ।

मेरा रास्ता, तेरे दर से है,
मुझे बास्ता, तेरे दर से है
तेरा दर ही मेरी है जुस्तजू
उसे छोड़ कैसे, जिया करूँ ?

मेरे यार क्यों मगरूर है ।
तेरी चाल बदली, हुजूर है;
तू जो आज मुझसे यूँ दूर है,
ये मैं दोष, किसको दिया करूँ ?

तेरे ग़म में खुद को डुबो दिया,
तेरा दर्द देख के, रो दिया;
तेरी बेरूखी का है, क्या सबब ?
तू ही कह कि, क्या मैं किया करूँ ?

७५. अगर हम न होते

अगर हम न होते, कदर दां तुम्हारे ।
तो क्वांरे ही रह जाते अरमां तुम्हारे ।
हमीं ने है जब, आशिक़ी ये सिखाई ।
तमी हुश्ने महफिल में, रौनक है आई;
अगर सूखी धरती पे, बरसे न पानी
तो प्यासी ही रह जाये, उसकी जवानी;
तुम्हें प्यार का लफ्ज लगता नया था;
हमें दाद दो, हमने कीया बयां था;
तेरे हुश्न को हमने, सिजदा किया जब,
तभी चाल में आई थिरकन तुम्हारे ।
तेरी साँस में जो है खूश्बू भर आई,
वो खिलते हुए गुल की है आशनाई;
अगर भौंर सोई कली ना जगाता,
तो खिलने का कब उसको मौका ही आता
न समझो हमें चलता-फिरता भिखारी ।
तुम्हारे ही दर के तो हैं हम पुजारी,
न इल्जाम दो इश्कवालों को, तुम यों,
हमीं ने है दी दिल को, धड़कन तुम्हारे ।
अजी इश्क का, हुश्न से है तकाजा,
न मानो बुरा अब तो पहलू में आजा,
तेरी साँस को हमने सरगम सिखाई
तेरे गीत में मेरी लय है समाई;
बने गीत-संगीत का साथ कैसा

कि संध्या सितारों का हो मेल जैसा;
बहुत बह चुके, मान-मिन्नत के धारे,
सजा डोली बैठा हूँ, दर पे तुम्हारे ।
तुम्हें इश्क में हमने, जीना सिखाया,
है खुद को तुम्हारी, शमा पे जलाया;
कभी आँच आने न, दी तुम पे अब तक,
जले फिर भी, बदनाम परवाना अब तक;
मिला नाम तुमको तो, मशहूरियत का,
लगा दाग हमको ही, नादानियत का;
न अब और हमको, तमाशा बना रे,
सहा हमने क्या-क्या न, पीछे तुम्हारे ?

७६. दिल की खुली किताब पे

दिल की खुली किताब पे, हमने लिखा था नाम ।
नाम सिर्फ़ तेरा, तेरा, सिर्फ़ तेरा नाम ।
इतनी बड़ी किताब जो कि,
उम्र भर चले,
पढ़ते ही रहो पढ़ते
कहीं छोर ना मिले;
खुलते हैं सफ़े इसमें नये, और नये मकाम ।
ताउम्र सफ़र करते रहे,
बेहिसाब हम,
तेरी तलाश में हुए,
खाना-खराब हम;
राहों में बहुत आये मगर, गुम हुए तमाम ।
तुमने जो किया हम पे करम
क्या कहें तुम्हें,
हमराज़ पुकारें कि कहें
बेवफा तुम्हें;
होठों से गया छूट, मेरी हसरतों का जाम ।
अब तो है यही दिल में
कहीं दूर, बहुत दूर;
जायें निकल हुजूम से
हों और न मजबूर;
खुशियाँ हों मुबारक तुम्हें, हमें ज़िन्दगी की शाम ।

७७. साजनवा घर आ

झुकी अँधिरिया, सावन आयो, साजनवा घर आ ।
नचे बिजुरिया, मन घबरायो, साजनवा घर आ ।
आई पावस की ऋतु प्यारी,
घिरी घटाएँ कारी-कारी;
मेहा बरसे, पड़े फुहरिया, साजनवा घर आ
पीहुका पीहुका, करे पपीहरा,
धड़के छतियाँ डोले जियरा,
अँसुआ ढरके नैन नागरिया, साजनवा घर आ
पवन चले पुरवैया सजना,
तुम बिन सूनो मेरो अँगना;
अंग अंग सिहरे, चले बयरिया, साजनवा घर आ ।
पावस ले संदेशा जाना,
मोरे पिया को जाय सुनाना;
बाट निहारत, गई उमरिया, साजनवा घर आ ।
करि सिंगार नित तुम्हें पुकारूँ,
दर्पण में निज रूप निहारूँ;
'श्याम' लई क्यों, फेर नज़रिया, साजनवा घर आ ।

७८. ऐ दिल मुझे बताना

शेरः- तुम दूर जा रहे हो दिल तोड़कर हमारा ।
मंजिले तुम्हें मिलेगी, छूटा मेरा सहारा
ऐ दिल मुझे बताना, किस ओर वो गये हैं
कोई न साथ उनके, रस्ते नये-नये हैं ।

बहती हुई हवाओ, तुम साथ उनके जाना,
थक जाये जब कभी वो, धीरे से थपथपाना;
हम रह गये यहीं पर, चित्त चोर तो गये हैं ।
फूलों भरा चमन ये, काँटों भरा लगे है;
मौसम बहार गम की, रातों भरा लगे है;
खुशियों के दौर सारे, काफूर हो गये हैं।
उनसे हुई जो बातें, अब याद आ रही हैं;
बीती जो साथ रातें, अब याद आ रही हैं ।
दिलका शुकून लेकर, झकझोर वो गये हैं ।
देता दुआएँ दिल है, तुमको मिलें बहारें,
रंगीनियाँ तुम्हारी, ये ज़िन्दगी सँवारें
गमगीनियों को हम तो, ले साथ सो गये हैं ।
उठती है टीस मन में, हम खुद से पूछते हैं ।
क्यों 'आज' तेरे अरमां तुझको ही ढूँढ़ते हैं-
उनसे बिछड़ के हम यूं, खुद में ही खो भये हैं ।
मस्ती भरे तराने, अब याद आ रहे हैं;
बीते हुए जमाने, अब याद आ रहे हैं;
भीगे ये 'श्याम' नैना, बरसात हो गये हैं ।

७९. चाँद दूल्हा बना

चाँद दूल्हा बना रात उसकी दुल्हन,
सज सितारों की बारात आने लगी ।
जुगनुओं ने भरी माँग है रात की
चाँदनी शशि का सेहरा, सजाने लगी ।

लेके आया मधुर, बेन्ड बाजा पवन,
वृक्ष पल्लव कथक, नृत्य करने लगे;
बज रहीं झींगुरों की हैं, शहनाइयाँ
झिल्लयाँ बीन अपनी, बजाने लगीं ।

डोली फूलों सजा हैं दिशाएँ खड़ीं,
श्यामली सुन्दरी की, विदा के लिए;
भोर होते दुल्हन, बैठ डोली चली
आँख शवनम के, मोती बहाने लगी ।

ये निशा और शशि का, अनोखा मिलन
हो रहा लो है, कुदरत के आगोश में,
शशि निशा का हुआ और निशा शशि की है
लेखनी गीत रच के, सुनाने लगी ।

८०. होली का त्यौहार

आया होली का त्यौहार,
लाया रंगो की बौछार;
तेरा साजन बड़ा रंगीला
गोरी कर ले आँखें चार;
देख ! दिन ये वरस में आये है ।
काहे ! आज बड़ी, शरमाये है ?
करले प्रेम भरी कुछ बतियाँ,
सोना आज न सारी रतियाँ;
अपने मन का भेद न कहना
पूछें भोर भये जब सखियाँ;
राज, अपना तू रखना, छिपाये है ।
काहे, आज बड़ी शरमाये है ?
आये ब्रज में कुंवर कन्हाई,
राधा के मन बात ये भाई;
रंग भरी पिचकारी लेकर
ग्वालन की टोली संग आई ।
ढोल-ढफ राग फगुआ सुनाये है ।
काहे ! आज बड़ी शरमाये है !
भरि पिचकारी कान्हा मारी,
राधा की भीगी सब सारी;
ले गुलाल राधा-सखियों ने
कान्हा की दुर्गति करी डारी;
ब्रज, होली के रंग में नहाये है ।
काहे ! आज बड़ी शरमाये है ?

८१. दिलों के रिश्ते

टूट् गये हैं इस नफ़रत से, आज दिलों के रिश्ते ।
चंदन वन में आग लग गई, टहनी घिसते-घिसते ।
किसकी नज़र लगी है जाने,
इस भारत माता को;
दुश्मन बनकर मार रहा है;
भ्राता ही भ्राता को;
अच्छा-बुरा न समझे कोई, घुन जैसे हैं पिसते ।
नष्ट हो गये कौरव-पाण्डव,
द्वेष-अग्नि में जलकर;
देश हमरा बिखर रहा है -
आपस में ही लड़कर
रिक्त हो गई प्रेम गगरिया, देखो रिसते-रिसते
वो होली, और ईद मिलन की -
यादें तड़प रही हैं;
नफ़रत की विष बेलें यारो
हमको हड़प रही हैं;
राम-रहीमा हाथ बढ़ाओ, ताजे हों फिर रिश्ते ।
यही दौर यदि रहा देश की
कैसे शाख बचेगी,
फिर काला इतिहास नफरतों,
की यह राख रचेगी;
कुछ तो बढ़कर आगे आओ, बन कर यार फ़रिस्ते ।

८२. गीत है उद्गार मेरा

गीत है उद्गार मेरा,
कवि करम उपहार मेरा,
पी रहा नौ रस मधुप ज्यों
साधना श्रंगार मेरा ।

जी रहा हूँ प्यार बनकर,
जीत में भी हार बनकर;
ज़िन्दगी बिखरी हुई है -
सत्य है, सुर-सार मेरा ।

तन बिखरना चाहता है
मन विचरना चाहता है;
कर रहे संघर्ष दोनों
है सहज, प्रतिकार मेरा ।

बोलिये किसको संभालूँ,
डूब कर बाहर निकालूँ;
है समर में सांध्य बेला
जूझना अधिकार मेरा ।

प्यास बढ़ती जा रही है,
आस घटती जा रही है;
है नियम संयम अधूरे
आत्मबल बीमार मेरा ।

है नियति संवेदना मम,
और जागृति चेतना मम;
कर रहा पुरुषार्थ हर पल -
हो कभी स्वीकार मेरा ।

वायु में मिल जाऊँगा मैं,
गंध बन घुल जाऊँगा मैं;
मृत्तिका संग राख से भी-
हो नया अवतार मेरा ।

८३. दिल के तार

छेड़िये तार, दिल के न मेरे,
ज़ख्म इनमें हुए हैं घनेरे;
रात का दर्द अब तक है बाकी
आ गये फिर, सबेरे-सबेरे ।

रोशनी का गये कर के वादा,
दे गये शब-ए-ग़म के अँधेरे ।

बीन बाजीगरों-सी बजा के,
लूटने आ गये क्यों लुटेरे ।

उड़ गये हसरतों के परिन्दे,
जब से डाले ख़िज़ा ने हैं डेरे ।

'श्याम' डूबेगी तेरी भी नैया,
देख अश्कों का दरिया बहेरे ।

८४. रात का नज़ारा

चाँद हँसने लगा, चाँदनी खिल उठी,
रात का ये नज़ारा, गज़ब ढा गया;
सुन पपीहे की धुन, पीहु का पीहुका
प्रीति का ये इशारा, गज़ब ढा गया ।

चाँदनी की किरन, जब जमीं पर पड़ी,
रातरानी हँसी, रंग-खुशबू लिए;
रह सकी फिर न चुप, श्वेतवर्णी कुमुद
ताल का वह किनारा, गज़ब ढा गया ।

आसमां के सितारे, जमीं पर उतर,
भर गये जुगनुओं में, अनोखी-चमक;
लेके झनकार पायल की, झिल्ली उठी
झींगुरों का सितारा, गज़ब ढा गया ।

साज सजकर विरहणी, जगी रातभर
अश्क बनकर के, शबनम हैं बरसा किये;
भोर होते उन्हें, भर चला गोद में
भानु का वह पिटारा, गज़ब ढा गया ।

८५. अब बसंत में

अब बसंत में, तितली रानी,
का होता अभिसार नहीं;
कैक्टस पनप रहे क्यारी में,
महके है गुलज़ार नहीं ।

काँव काँव करते कौओं को,
श्राद्ध पक्ष में दावत मिलती;
उनकी करकश, कड़वी बोली,
कानों को न, किसी के खलती;
अब कौओं का, राज आ गया,
कोयल का स्वर सार नहीं ।

रीति-नीति रह गई ताक में,
शिष्टाचार हताहत है;
अनाचार की संध्या आई,
भ्रष्टाचार शराफ़त है;
बदल रहे, उपमान जगत के,
व्याख्या की दरकार नहीं ।

बन्धु-बान्धव, राश न आये,
बूढ़े मात-पिता ठुकराये;
सीमित है, कुटुम्ब इतना ही,
हम दो और, हमारे जाये;
टूट रहे अनुबंध स्नेह के,
अन्तर में रसधार नहीं ।

दीमक पैठा, राजनीति में,
हुई खोखली, गुलबाँगे,
धमकाते, चूहे, बिल्ली को,
ऊँची कर, अपनी टाँगे;
जंग लगी, जन तलोारों में,
अब पहले-सी धार नहीं ।

नेतागीरी, धन-कुबेर
बनने का अच्छा ज़रिया है;
लूट मचाकर मुखियाओं ने
आज उजाड़ी बगिया है;
कैसे हो, आबाद चमन ये?
इन्हें वतन से प्यार नहीं ।

* * *

परिचय

नाम : श्यामपाल सिंह चौहान, "श्याम"

पिता का नाम : श्री भूमिराज सिंह चौहान

जन्म तिथि : २२/ ०५/ १९४४

जन्म स्थल : फ़र्रूखाबाद (उ. प्र.)

शिक्षा : बी.ए., बी.एड्.

सेवा कार्य : अहमदाबाद की नगर निगम की शालाओं में सन् १९६४ से सन् २००२ तक शिक्षण कार्य करते हुए प्रधानाध्यापक पद से सेवा निवृत्त ।

अभिरुचि : स्वाध्याय, लेखन और संगीत

साहित्य सेवा : गीत, ग़ज़ल, दोहा, कुँडलिया, हाइकू एवं मुक्तक आदि विधाओं में लेखन कार्य।

प्रकाशित : गुलदस्ता (काव्य संग्रह) 2022

गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा स्वीकृत ग़ज़ल संग्रह 'बताओ क्या है हल' प्रकाशनाधीन । साहित्यालोक अहमदाबाद के सहयोगी काव्य संकलन "जलते दीपक", "उजाले की ओर", "संवेदना के स्वर" एवं मा. जे. पुस्तकालय के संकलन "मंजूषा" भाग : १-२ में रचनाएँ प्रकाशित । इसके अतिरिक्त कयी अन्य संकलनों- कानपुर से " दोहा दीप " एवं कानपुर के ही अन्य प्रकाशन "स्वातंत्र्योत्तर कवि- कवयित्रीयाँ "। ग्वालियर से "साहित्यायन", नयी दिल्ली के विश्व पुस्तक प्रकाशन से "संस्कृति के कमल" एवं लखनऊ की "चेतना स्रोत" आदि में विभिन्न विधाओं की रचनाएँ प्रकाशित ।